SHRI GURUDAS DAS GUPTA: The point is...

KUM. MAMATA BANERJEE: I will reply to all the points. You have to listen.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, I am listeing to everybody. But, if a Member of the House makes a suggestion that the hon. Minister of State should devote little more time to the development of sports...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Do you have any personal problem?

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: ... than what she is doing at the moment, it seems, she becomes angry with me. It is for the betterment of sports that I am suggesting.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Please conclude now.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, lasly, I do not suggest that there should be a Commission. I do not suggest that let there be a National Commission of Sports which the Government should appoint. I am not suggesting that. But what I believe is that the Government should seriously ponder over the reasons for the failure. This statement does not give that sense. There must be a heart-searching. And if the Government does not really search out, find out the reasons for this colossal national failure, then, I don't believe, Madam, that the sports is going to improve. And without improving the sports the morale of the youth cannot be improved. And without a new younger generation coming up, the future for the country may not be that bright.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Mr. Shankar Dayal Singh. You begin now.

SHRI SHANKAR DAYAL SINGH (Bihar): I will start after the lunch.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): All right.

The House stands adjourned for lunch till 2.30 P.M.

The House reassembled at thirty-four minutes past two of the clock, [The Vice-Chairman (Shrimati Jayanthi Natarajan), on his visit to China.

The House reassembled at thirty-four minutes past two of the clock. [The Vice-Chairman (Shrimati Jayanthi Natarajan)].

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—THE PERFORMANCE OF THE INDIAN CONTINGENT IN THE BARCELONA OLYMPICS—*Contd.*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): We continue with the calling attention on Barcelona. Shri Shankar Dayal Singh, are you speaking or you want to yield to Dr. Sivaji?

SHRI SHANKAR DAYAL SINGH: I am speaking.

महोदया, बार्सिलोना से अधिक मुझे अपने इतिहास की चिंता हो रही है। चिंता इस बात से हो रही है कि इतिहास में महाभारत के काल में एक अर्जुन हमारे यहां पैदा हुये जिसने नीचे पानी में देखकर मीन की आंख को छेद दिया था। द्रोपदी ने उनके गले में वरमाला, विजयमाला पहनाई थी। आज हमारे बीच अर्जुन सिंह जी सक्षम व्यक्ति हैं लेकिन पता नहीं अर्जुन सिंह जी का निशाना क्यों इस तरफ ठीक नहीं बैठा कि वरमाला उनके गले में पड़ सकी।

क्योंकि मैं चाहता था कि इस ओलिम्पिक से बार्सिलोना के स्वयंवर में निश्चित रूप से विजयमाला और वर माला उनके गले में पड़ेगी । मैं जानता हूं, उनको किसी से कम चिन्ता इस बात की नहीं होगी । मैं यह कहना चाहता हूं कि आज दुनिया में केवल आर्थिक और राजनैतिक रूप से ही किसी देश की महानता नहीं आंकी जाती है बल्कि उसके लिये खेल भी एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में आज की प्रगति के हिस्से माना जाता रहा है । इसलिये पूरा देश यदि इस बात को लेकर चिंतित है और संसद भी इस बात को लेकर चिंतित है तो मैं समझता हूं कि यह चिंता स्वाभाविक ही है । मैं सरकार का ध्यान अपने दो प्रश्नों की ओर अभी आकर्षित करना चाहता हूं । इसी सदन में मैंने दो सवाल इस संबंध में किये थे । एक 8 मई को और दूसरा 17 जुलाई, 1992 को किया था । माननीय श्री अर्जुन सिंह जी ने बहुत विस्तार से उनका जवाब दिया था और ठीक ही कहा था और विश्वास प्रकट किया था कि इस देश के जो खिलाड़ी भाग लेने जा रहे हैं उनसे काफी अधिक संभावनायें हैं और जैसा अभी ममता बनर्जी ने जवाब दिया और एक स्टेटमेंट सदन के सामने रखा, निश्चित रूप से हाकी और तीरंदाजी में बहुत बड़ी आशायें थीं । उसके साथ साथ कुश्ती, पाल नौका और मुक्केबाजी में भी हमें आशायें थीं । हमारी आशाओं पर तुषारापात हुआ । यह देश ऐसा नहीं है कि इसने स्वर्ण पदक हासिल न किये हों । हमने आठ बार हाकी में ओलम्पिक में स्वर्ण पदक प्राप्त किये और इस संबंध में ध्यान चन्द, ज्ञान चन्द और रूप चन्द, सबकी चर्चा हुई थी । लेकिन मैं इस संबंध में जानबूझकर श्री जयपाल सिंह जी की चर्चा करना चाहता हूं। वे एक आदिवासी युवक थे । जयपाल सिंह जी पहले कैप्टन भारत के हुये जिनके नेतृत्व में भारत को स्वर्ण पदक मिला था और इसलिये इस बात को कहना चाहता हूं कि आज भी खेल कूद में बहुत बड़ी संभावनायें हैं । लिम्बा राम जैसे लोग आज भी आदिवासी क्षेत्रों में हैं । अपने रांची और खूंटी के स्कूलों की हाकी की टीम जब लड़ती है तो वह विजयी होकर लौटती हैं । इसलिये मैं आपके द्वारा सरकार से यह कहना चाहता हूं कि सवाल केवल खेलों की दुनिया में यह नहीं है कि हम केवल स्वर्ण पदक प्राप्त करते हैं बल्कि उसका संगठन किस तरह से करते हैं । खेलों की दुनिया में यह ठीक है कि जहां हम खड़े हैं, हमारी स्थिति काफी हास्यास्पद है । छोटे-छोटे देश, क्यूबा और हंगरी जैसे देश इतने अधिक पदक अपने जिम्मे लाये हैं और पूरी लिस्ट हमारे सामने आती है तो दूरबीन लगाकर देखने से भी हम कहीं कांस्य और रजत में भी अपने आप को नहीं पाते हैं । इससे स्वाभाविक है कि मंत्री महोदय और पूरे देश को दुख है । लेकिन हम इस संबंध में यह जानना चाहते हैं कि आखिर ऐसा क्यों हुआ ? क्या हम हमारी हीन भावना इसके लिए जवाबदेह है ? क्या हमारी दक्षता में कोई कमी है ? क्या हम अपने खिलाड़ियों का चयन ठीक ढग से नहीं कर पाते है या उनको छोटी उम्र में प्रशिक्षण के लिए तैयार नहीं करते हैं या कहीं न कहीं हम राजनीतिक दबाव में तो नहीं पड़ जाते हैं ? इस बार 52 और 27 अधिकारी इन खेलों में ओलम्पिक में भाग लेने के लिए गए थे और निश्चित रूप से पिछले दिनों जो हाकी का प्रदर्शन था उससे हम यह सोचते थे कि हाकी में हम विजयी होकर लौटेंगे लेकिन 1988 में सिओल में जहां हाकी में छठा स्थान था, इस बार अनेक सम्भावनाओं के बाद भी हम सातवें पर चले गए । इन सब बातों पर हमें राष्ट्रीय संदर्भ में बहुत ही ध्यान-पूर्वक सोचने की जरुरत है । हमारे मानव संसाधन मंत्री जी सदन में शिक्षा और संस्कृति संबंधी नीति निर्णय का पेपर प्रस्तुत करने वाले हैं । मैं समझता हूं कि खेलों के संदर्भ में भी इस सदन में आपको एक नीति निर्धारण का पेपर प्रस्तुत करना चाहिए । वह बहुत आवश्यक है । इन शब्दों के साथ मैं केवल सरकार से तीन चार बातें जानना चाहता । आपका अधिक समय नहीं लूंगा ।

इस बार जो ओलम्पिक में भाग लेने के लिए भारतीय टीम के कोच और दूसरे

[श्री शंकर दयाल सिंह]

अधिकारी गए, उस पर टोटल खर्चा आपका कितना आया और पिछले चार वर्षों में प्रशिक्षण पर टोटल खर्चा कितना आया ? एक तो मैं यह कम्पेयर करना चाहता हूं कि पिछले चार वर्षों में जो प्रशिक्षण पर खर्चा किया वह राशि अधिक थी या जो आपकी टीम गयी 52 और 27 लोगों की, उस पर आपका अधिक खर्चा बैठा ।

दूसरा, मैं आपसे यह भी जानना चाहता हूं कि अगले ओलम्पिक के लिए देश में क्या तैयारी चल रही है ? यदि यह तैयारी चल रही है तो अभी से, यानी कि महीने, दो महीने, चार महीने के अंदर यह निर्धारित हो जाना चाहिए कि किन किन खेलों में हमारी टीम वहां भाग लेगी, अगले चार साल के बाद ?

तीसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि आठवीं पंचवर्षीय योजना में जो हमारी खेल नीति है इसके बारे में एक राष्ट्रीय नीति का निर्धारण होना चाहिए । तो क्या कुछ आप ऐसी पहल करेंगे जिससे खेलों पर हम अधिक से अधिक खर्च करते हुए कोई उपलब्धी प्राप्त कर सकें ?

अंतिम सावल मैं यह पूछना चाहता हूं, यह वित्त मंत्रालय से भी संबंध रखता है कि हमारे खिलाड़ी या हमारी कोई टीम स्वर्ण पदक तो लेकर नहीं लौटी पर वहां से नयी स्वर्ण नीति के अंतर्गत क्या वह कुछ सोना लेकर आए हैं या नहीं ? क्योंकि विदेशों से लोग सोना लेकर आते हैं । इन शब्दों के साथ में सरकार से एक निवेदन और प्रार्थना करना चाहूंगा...

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): This is no good. They cannot bring gold.

SHRI N. K. P. SALVE: Do not try to denigrate our sportsmen.

SHRI SHANKAR DAYAL SINGH: What is the objection in this? I only wanted:

अगर कुछ सामान लाते हैं तो कस्टम को पे करते हैं ...

SHRI JAGESH DESAI: It is not so Madam, they cannot... (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): I cannot hear you, Mr. Jagesh.

श्री शंकर दयाल सिंह : मैंने यह कहा कि जो नयी नीति बनी है उसके अनुसार कोई भी व्यक्ति सोना लेकर आ सकता है और कस्टम को पे कर सकता है । मैं यह बोल रहा हूं ।

SHRI JAGESH DESAI: What I am saying is, they cannot bring. Only NRIs who want to come to India for good can bring gold. Nobody else can bring, no other Indian can bring. (*Interruptions*). Not at all.

श्री शंकर दयाल सिंह : अगर वे मैडल लेकर नहीं आए तो मैंने जो कहा उसमें आपत्ति की कोई गुंजाइश नहीं है, कोई अपमानजनक शब्द मैंने नहीं कहे ।

इन शब्दों के साथ आखिर में मैं यह कहना चाहता हूं कि श्री अर्जन सिंह मानव संसाधन विकास मंत्री इस पर गंभीरता से क्या विचार करेंगे कि अगर हमारी पूरी तैयारी न हुई हो, पूरी संभावना न हो तो हम दो-चार बार ओलम्पिक में अपनी टीम न भेजें, वहां अपनी अदद करें । इसमें इस तरह से हम 85 करोड जनता का पैसा बरबाद करते हुए टीम भेजे और इतना पैसा खर्च करें ऐसा न करते हुए जब पूरी संभावना बन जाय, 12 नहीं, 2, 4, 6, जितने गेमों में हम तैयार हों, उन खेलों में पूरी तैयारी के साथ जाना चाहिए । नहीं तो एक-दो बार हम ओलम्पिक में भाग न लें, जैसा कि कई देशों ने किया है । इसमें हमारी कोई दुर्बलता नहीं होगी और मैं समझता हूं कि इससे हमारा कोई अपमान नहीं होगा बहुत बहुत धन्यवाद ।

SHRI N. K. P. SALVE: Madam, it is unfortunate that we come to evaluate

our standards in sports after we return disappointed and dismayed from Olympics. This is not the first time we are singing in chorus in the Parliament a requiem on the nation's lost honour, dignity and self-respect in the Olympics. Every four years we do it regularly and then we forget about it. It is most unfortunate that anything could have been said to denigrate our sportsmen and it is equally unfortunate anything should have been said. So far as the statement of the Minister of Sports is concerned, I think I have been hearing statements of the Ministers of Sports after we have come dismayed and disappointed from Olympics but for the first timt I have seen a statement which is really mature and balanced. What else could she have said under the circumstances? She did not go there to perform the pole vault. Therefore, Madam, let us rise above ourselves. It is no use trying to find fault with Shri Arjun Singh or with Kum. Mamta Banerjee. It is we who have failed as a nation. If we have failed in Olympics, all of us have failed as a nation. Kindly realise this and then only we will be able to do something. As one who is a devout lover of sports, also associated with some of the most prestigious federations, as the president of the Cricket Control Board...and as Chairman of the Joint Management Committee of the Reliance Cup, Madam, there are a few things I have known about sports, and I want to share my thoughts with the hon. Ministers and with this House.

It is undoubted that in cricket we have done better than in many other disciplines. It is very unfortunate that some adverse comments should havt been made on the Cricket Control Board. At least one thing the Cricket Control Board does very creditably is, it does not go to the Ministry to ask for any doles. It survives on its own. We have been world beaters once and we went at semifinals. And we are capable of beating the world again. And the Cricket Control Board is doing on its own. So it is very unfair to make any adverse comments on the Cricket Control Board.

Be that as it may, Madam, thert are some things which we are lacking lamentably and unless we remedy those, it is no use. We are singing a requiem everytime we lose—how is it possible? We don't prepare ourselves to win. We don't produce world champions, we don't build world champions, and then regret in the House that we have not won a medal.

Madam, the first and foremost thing we are lacking is a proper sports culture. Sikander Bakhtji was right to that extent when he said that we lack that sports management culture. We lack proper facilities of choosing proper people who are dedicated to training. It is the trainers who play 90 per cent of the role, and 10 per cent of the role is performed by those whom they train. But if the whole thing is to be carried out on a political level, only for the purpose of building up a career, then nothing will come out of it. Therefore, Madam, there are a few things that I want to suggest.

First and foremost that I want to suggest to this Ministry is, kindly rid all the federations of politics. Politics is taking very heavy toll, for which politicians and bureaucrats are equally responsible. I will make my suggestion in that respect. If we really want to build world beafers, my first suggestion is, we must learn to catch them young. Concentrate on a few disciplines, get them in their 12th or 14th year of age, and then put them on rigorous discipline—nothing else. Every ounce of food that they take must have proper nourishment. I had seen a film on Nadia, Madam. The poor child, in the night, was stealing a toast with cheese, because in daytime the diet that was being given to her was insufficient—she used to feel famished And that toast was snatched by the trainer, saying, "You have to be a world beater; you can't eat more than what you are allowed to eat." That kind of rigorous training and that kind of rigorous discipline is needed. Unless there is dedication, discipline and determination, nothing will come out of it. And we are lacking in all these.

[Shri N.K.P. Salve]

We just train a few people here and there, and because they conform to the norm—there is nothing wrong—you send them according to the norm. But why you don't build world beaters is the question. That by norms you find the people are not going to make a very great impact in the Olympics—you have said that—you know it in advance. But the question is not that, the issue is not that. The issue is, why are we not making people who are really capable of being world champions?

Then, Madam, it is only practice, practice and practice which makes a person perfect. I remember the great Col. C. K. Nayudu. Arjun Singh ji will be knowing about him. Someone asked him, "What is the secret of your great success?" He was one of the world's great cricketers. He said, "It is very simple. In the morning you do some batting, do some bowling. In the afternoon, before and after lunch, do some batting and bowling practice. And then, in the evening, do some bowling and some batting. In the night, before you go to sleep, for two hours think of what the deficiency in you is. Then you will become the world's greatest cricketer." It is practice alone which makes a man perfect. Unless we reach perfection there is no use and my grievance, Madam, is that you never trained people to perfection.

Limba Ram is a super archer, and you tell us that there was new format. How did we not know the format? Where is the lapse? Please find out, because Limba Ram is certainly a world beater and I don't know why he should have failed.

As to hockey, Madam, Sikander Bakhtji has properly pointed it out. There is a very good article in *Sunday*, and only one small line I want to read from that. How have we failed? In physical fitness we are very much below par. Now everyone is scoring penalty corners. With a penalty, in 1½ seconds the ball must be netted. Unless you are able to do that, you are no good in hockey. And what have we done for this? Madam, this is what one of the commentators has to report. Since I agree with this totally, I quote it:

> "Today the trend in world hockey is to capitalize on penalty corners. In this sphere India has proved to be the weakest among the 12 nations in the fray."

How are we going to be world champion when we are the weakest in the only area in which we are able to score a goal. As many as six corners were wasted in the crucial match against Britain. Obviously, Indians had not done their homework well. Hockey is one area in which we are supreme. If you want to claim skill—there is an amorous concept of total hockey, I really do not know—we played with skill, but our stick-work had gone down. The stick-work of the Pakistani forwards was tremendous ... (*Time bell rings*)

Madam, give me two or three minutes.

Likewise, what I suggest, what I want to submit, is this. I will come straightway to the last point which I want to make, which is very important. I want to bring it to the notice of the Human Resource Minister that from my personal knowledge I can tell you that all the sports bodies are dripping, they are saturated and dripping with politics. Put an end to it for God's sake. Kindly make a rule first and foremost that no Minister and no bureaucrat will be allowed to contest an election. That is the beginning of all politics in the sports world. I am voicing the sentiment of the House when I say, "No bureaucrat and no politician in power should be allowed to contest an election in sports bodies' We, both politicians and bureaucrats, have done enough damage to the country outside. Let us not ruin the sports bodies.

Madam, on how in a stealthy, sneaky and disonest manner bureaucrats aggrandise their personal interest, I want to bring to your notice and to the notice of this House one instance of terrible corrup-

tion. I am surprised that this is without the knowledge of the Minister of Sports. This is a letter I am referring to, written by the Land and Development Officer to the Secretary, Delhi Golf Club. Golf is a game of the elite. I would have nothing to say about that. I like the Golf Club for one reason. The good, open space, lush green lawns are like the lungs of any city, any town as such. The Government's valuable land is given on lease, not in consideration that the moneys are increased or that the standard is sought to be increased. What happens? I am quoting from this letter addressed to the Secretary, Delhi Golf Club, dated the 20th of July, 1992, in which one of the terms of the lease, for extending the lease for 20 years is this. I am quoting from the letter:

"In consideration of the fact that the Government is making available to the Club a large area of land for promotion of sports, Government is interested in ensuring access of such sports facilities to its employees. It is necessary that Government servants should have an easy access to the facilities provided by the Club. When new members are enrolled, every fifth member with voting rights enrolled will be a Government servant. At the time of enrolling new members, same percentage will be maintained provided they meet the handicap rules of the Club. If you do not do this, you cannot get the lease."

Madam, this is not the end of the matter.

"There shall be three nominee officers from the Government of India on the management committee."

This is a sports body looking after the important sport of Golf. See the way they are aggrandising their interests:

"There shall be three nominee officers from the Government of India on the management committee of Club with full voting rights. Secretary, Ministry of Urban Development, ex-officio, will be one of the nominee officers. The Ministry of Urban Development will nominate two other officials."

Not the Ministry of Sports. I do not understand whether they are working in cohesion, coordination and all that. Even if the Secretary does not know the difference between the bogey and bridle, he must be on the governing body, and he mus thave the voting right ! It is the voting right that I am agains. Let them have the facilities.

Then, last, Madam:

"The Club shall take measures to ensure that officers who come to Delhi on tenure..." (Interruptions)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): He is talking about sports.

SHRI N.K.P. SALVE: I am talking about sports. I am talking about corruption. Shankar Dayal Singhji.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Please continue, you continue, please.

SHRI N.K.P SALVE: Madam, this is most relevant. This is how corruption comes in sports bodies.

SHRI JAGESH DESAI: It is most important... (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): I think it is very relevant.

SHRI N. K. P. SALVE: I am sorry, I am really sorry that a man like you should have questioned this. This is how corruption comes in the sports bodies. Tell me what business bureaucrats and politicians have to control a sports body to have the voting rights... (*Time bell rings*)

Madam, one more minute, and I am done.

"The Club shall take measures to ensure that officers who come to Delhi on tenure posting..." Now, I may tell you, this "tenure posting" excludes all the High Court judges, Supreme Court judges, defence personnel, para-military officers

[Shri N.K.P. Salve]

and PAC officials. And, Madam, what wrong have the MPs done? I am a member there. We come here for five or six years' time. Why are we not asked to come at least and why are the facilities not made available to us? But no, it must be given to those officers who have come in competition at the All-India level.

The most important part of the deed is how the bureaucrats will go and dominate the Golf Club. I am voicing the sentiments of the entire House. The Minister must reply to this. But this is something which will not be done. We will not allow this to happen.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): What is the date of what you read?

SHRI N. K. P. SALVE: The date of the letter I read out is 27th of July, 1992. I am not against any bureaucrat. I don't know who has written this letter. I am against the system. Is the Government lease given to aggrandise the interests of the bureaucrats and Government Officers only? And what are the newspapers doing? Supposing this kind of a lease had been made that Members will be allowed to take facilities in Golf Club free of charge, all the papers would have said: Look at the shamelessness of the Members of Parliament. I have not read about this in any paper whatsoever.

In the end what I want to submit is, for God's sake, make a good beginning by putting an end to politics in sports bodies, which is manipulated by politicians in power and by bureaucrats in authority. (*Interruptons*)

श्री मोहम्मद सलीम (पश्चिमी बंगाल) : उपसभाध्यक्ष जी, इस महत्वपूर्ण विषय पर. . . (**व्यवधान**)

SHRI N. K. P. SALVE: I must make one thing clear. I was President of the Board of Control for Cricket in India. But I have not contested in an election. Unanimously I was elected.

SHRI N. E. BALARAM (Kerala): Why did you take it seriously? I was just cutting a joke. And you just got up.

[**उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह)** पीठासीन हुए]

श्री मोहम्मद सलीम : उपसभाध्यक्ष जी, बार्सीलोना में भारत की जो टीम भेजी गई थी, उसकी वैधता के बारे में सरकार ने इसके बारे में क्या किया है और क्या करने जा रही है, उसके बारे में चर्चा करने जा रहे हैं ।

यहां कुछ सदस्य अपनी-अपनी डिफेंस में भी कुछ बता रहे हैं कि कौन कितना किस खेल को पसंद करते हैं, या कौन कितना खेल के साथ जुड़े हुए हैं या खेल संगठन के बारे में बता रहे हैं । इसी धारणा के अनुसार मंत्री महोदया ने जो बयान दिया है, उसमें मैं उन सदस्यों के साथ सहमत नहीं हूं जो कहते हैं कि यह बहुत ही बैलेन्स्ड स्टेटमेंट है । हम यह चर्चा कर रहे थे, विषय था कि बार्सीलोना खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन और इस बारे में सरकार द्वारा की गई कार्यवाही, पर हम लोग बयान में क्या देख रहे हैं कि पहले मंत्री महोदया ने बहुत आशा बंधाई कि भारतीय दल का प्रदर्शन निराशाजनक रहा है, परंतु निराशा होने की कोई बात नहीं ।

हम निराश किसलिए नहीं होंगे ? पूरा बयान लिम्बा राम, टैनिस, हाकी के बारे में हमारा प्रदर्शन कैसा रहा, जो अखबार के जरिए और टेलीविजन के जरिए हमारे लोगों को मालूम हो गया ।

मंत्री महोदया, हमारी चर्चा का दूसरा विषय जो था, सरकार की कार्यवाही, उसके बारे में कुछ नहीं कहा । निराश होने का कारण नहीं, क्योंकि आखिर में यह कहा गया है कि एयर-इण्डिया के साथ एक राष्ट्रीय हाकी अकादमी, राष्ट्रीय स्टेडियम में बनाई जा रही है । सरकार की कार्यवाही यहां तक सीमित है, सि एक लाईन बनाई गई है । उन्होंने शुरु

किया था कि हमारी जो भूमिका रही और उसके बारे में हमारी बाद में क्या आशा रहेगी।

हम यहां पर पोस्ट-मार्टम कर रहे हैं बयान के मुताबिक, लेकिन हमने जो चर्चा शुरू करनी चाही थी, वह यह है कि खेल के बारे में सरकार क्या कार्यवाही कर रही है, खेल नीति के बारे में क्या सोच रही है?

अभी दो साल के बाद फिर एक खेल होगा। बार्सीलोना ओलिंपिक के एक साल पहले से सरकार क्या कर रही थी? बयान शुरू हुआ है टीम भेजने के बारे में कि हमने फेडरेशन से, इंडियन ओलिंपिक एसोसिएशन से बातचीत करके जायंट सिलक्शन के मुताबिक टीम भेजी है, लेकिन उसे भेजने से पहले आज विश्व के दरबार में अगर खेल में हमें पदक लेना है, या अपनी विशेषता प्रमाण करनी है, तो हमें सिर्फ टीम भेजने से या कोच सिलैक्ट करने से सरकार का काम खत्म नहीं होता। बयान में इसके बारे में कोई बात नहीं है कि एक साल पहले से सरकार को यह विदित था या नहीं कि एक साल बाद बार्सीलोना में ओलिंपिक होने जा रहा है।

3.00 P.M.

दूसरी बात यह बयान में खुद कंट्राडिक्शन है। हम कहते हैं कि एक-दूसरे के ऊपर दोषारोपण कर रहे हैं कि ऐसा ज्यादा कुछ निराशाजनक नहीं हुआ है। सिर्फ मीडिया और सदन में चर्चा करते समय एक ऐसा माहौल पैदा किया गया था कि हमें पदक मिलने की आशा है, जो अनुचित कथन है, इस बयान में मंत्री जी कह रहे हैं, जबकि उसी पैराग्राफ में मंत्री जी यह कह रही हैं कि हमें शूटिंग में, हाकी में, और आर्चरी में पदक मिलने की आशा थी। तो कौन गलत है? मीडिया या हमारे देश की 86 करोड़ जनता या हमारे देश के नौजवान अगर यह उम्मीद किए थे, जो उम्मीद इन्होंने जगाई थी कि हमें कुछ मिलने की आशा है, वह कहते हैं अनुचित कथन था और इसलिए ऐसा खास कुछ निराशाजनक नहीं हुआ है। ऐसे ही होना था। हम समझते हैं यह बात ही सही है कि पदक की कोई आशा थी ही नहीं, क्योंकि हम पदक के लिए कोई कोशिश किए नहीं थे। लेकिन कम से कम इस चर्चा से यह मालूम तो होता है कि हम कितनी गंभीरता से इस मामले को लेते हैं। उपसभाध्यक्ष महोदय, आज गेम्स चाहे स्पोर्ट्स को हिन्दी में हम खेल कहते हैं लेकिन विश्व में स्पोर्ट्स या गेम और खेल तमाशा नहीं रहा, ट्रेनिंग स्कीम उसके जरिए आज वह विश्व में देश प्रेम जगाने के लिए, आज वह अपनी श्रेष्ठता प्रमाण करने के लिए, राष्ट्रीय गौरव स्थापित करने के लिए माध्यम की हैसियत से व्यवहार किया जाता है। क्या हमारी सरकार को इस बारे में सोच है? पिछले 15 रोज एक पक्ष हमारे देश के नौजवान बच्चे, बूढ़े अखबार रोजाना खोलें और रोज हैड लाईन जो पढ़े वह सिर्फ मैडल टैली हो नहीं खेल की पत्रिका अखबार में हम यह देखते हैं रोजाना जो सारा जहां हम से अच्छा और हम फिर राष्ट्रीय गौरव की बात करते हैं हम हमारे नौजवानों के अंदर राष्ट्रीय भावना पैदा करने की बात करते हैं, देश प्रेम पैदा करने की बात करते हैं, एक इतना अच्छा सा माध्यम जो सरकार के भाषण से नहीं, टेलीविजन पर दी हुई या लाल किले से दिए हुए प्रधान मंत्री के भाषण या राष्ट्रपति के भाषण से यह असर नहीं करता, अखबार में निकली हुई दो-चार खबरें हमारे देश के प्रतिनिधि करने वाले अगनी श्रेष्ठता प्रमाण किए हैं इससे। ... (व्यवधान) महोदय, थे अभी आ ही रहा हूं।

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह): आप सीधे सवाल पूछ लीजिए।

श्री मोहम्मद सलीम : मैं सवाल ही कर रहा हूं। मैं पहले बयान से उत्पन्न जो सवाल हैं उन्हीं को कह रहा हूं, अब तक बयान से बाहर ही नहीं गया। हम उसे अगर वह गंभीरता देते हैं, महत्व देते हैं, खेल को, खेल माध्यम को तो हमारे जो बच्चे हैं, हमारे जो नौजवान हैं उनके अंदर हम वह भावना पैदा कर सकते हैं। बयान में रुपये और पैसे के बारे में कुछ नहीं कहा गया लेकिन बाहर में अखबार के जरिए या हमारी चर्चा में भी यह विषय आया मंत्री महोदय जी ने कहीं हमारे राज्य सभा में कहीं प्रश्नोत्तर के दौरान कहीं कि पैसा कम है, रुपये की कमी है। यह हम बिल्कुल मानते हैं कि अगर

[श्री मोहम्मद सलीम]

हम उसे महत्व नहीं देते हैं, उसमें अगर प्रायरिटी नहीं देते हैं प्राथमिकता ठीक नहीं करते हैं तो कैसे करेंगे? लेकिन सिर्फ पैसा, तो सूरीनाम, इथियोपिया जो भूखा मारा जा रहा है, क्यूबा जो घेरा हुआ है, वह अपनी स्थिति पिछली बार जब वह ओलंपिक खेल में हिस्सा लिया था तो 7वां स्थान था मैडल टैली में और वह भेजने से पहले यह कहा कि हम छठा स्थान लेने की कोशिश करेंगे और वह 5वां स्थान लिया है। वह कितने करोड़ रुपया खर्च कर सकता है? लेकिन सवाल यह है कि हम वह भावना पैदा कर रहे हैं या नहीं? हमारे खेल राज्य मंत्री की फाइटिंग स्पिरिट है, एक लड़ाकू का जो भावना है हम उसका कद्र करते हैं, लेकिन हम यह समझते हैं कि खेल के मैदान में हमारे जो खिलाड़ी हैं उनके अंदर भी यह लड़ाकूपन या फाइटिंग स्पिरिट पैदा होनी चाहिए। लेकिन क्या होता है, मैं इसी ओलंपिक से शुरू करता हूं। हमारी टीम भेजने से जो क्लीयरेंस लगती है जो तो पासपोर्ट, वीसा, टिकट वगैरह भेजने तक हम उसे उतना महत्व नहीं देते हैं। सलैक्शन के प्रोसीजर से ऐसा होता है कि एकदम आखिरकार जा करके हमें मालूम होता है कि इसको हमें भेजना है, यह जाना है। एयर इंडिया एक रोज़ बाद प्लेयर्ज़ को कहेगी। हम अगर इसको जैसे कारोबार की टर्म में जब बात करते हैं बिजनैसमैन की सिंगल विंडो क्लीयरेंस की बात होनी चाहिए। खेल के बारे में जब अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हम हिस्सा लेते हैं तो इसको जरा महत्व दे करके जैसे हमारे वीवीआईपी ट्रीटमेंट मिलता है, वीवीआईपी के दौरे के समय पर कि जब राष्ट्र के प्रतिनिधि की हैसियत से बाहर जाते हैं तो सब डिपार्टमेंट एक जगह हो करके, उसको वह भावना तैयार करने के लिए कि यह देश के लिए प्रतियोगिता में जा रहा है, देश के लिए गौरव लाने के लिए, वह हमें तैयारी के अंदर यह भी चीज रहना चाहिए। सिर्फ प्लेयर्ज़ को कसूरवार करके कोई फायदा नहीं है। चूंकि हमारे देश में हम यह देखते हैं, सोशलिस्ट कंट्रीज सी०आई०एस०, क्यूबा इसके बारे में नहीं जा रहा हूं, हमारे देश में भी हम अगर श्रेष्ठता चाहते हैं तो पहली बात यह है कि हमारे खेल का फैलाव चाहिए, एक्सपेंशन चाहिए।

हम क्वालिटि, गुण नहीं ला सकते एक्सपेंशन के अलावा, लेकिन हम देखते हैं कि खेल के मैदान में अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित कर सकती हैं ऐसी शक्ति। आज हम देखें अफ्रीका को ट्रैक एण्ड फील्ड में उसका क्या रिजल्ट निकाला। जो वैस्टर्न कण्ट्रीज हैं वहां वह काले लोग जो नेगलेक्टेड हैं उनके अंदर यह भावना हमेशा रही है कि वह श्रेष्ठ बन सकते हैं। लेकिन समाज में शिक्षा के कारण अर्थ-नीति के कारण उन्हें पीछे फेंका गया है, धकेला गया है सदियों से। अगर हम उनको ट्रेनिंग देते हैं, अगर उनको खींचकर निकाल देते हैं उनके अंदर वह भावना तैयार करते हैं तो वह अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित कर सकते हैं। लिम्बा राम, एक लिम्बा राम नहीं है। हमारे देश में आदिवासियों के अंदर जनजातियों के अंदर, गांवों में पिछड़े इलाके में ऐसे लोग हैं, जिनको बहुत प्रतिकूलता के अंदर जिंदगी निभानी पड़ती है। हम उसे महत्व देकर के उस टेलेण्ट को अगर हम ढूंढ कर निकालते हैं और उसके बाद ट्रेंड करते हैं तो हम कुछ कर सकते हैं लेकिन हमारी आजादी के बाद से तमाम विषयों की तरह खेल में भी ओवर-कंट्रिब्यूशन है। हम खेल में कैसे आगे आएंगे बयान कर दिया कि दिल्ली में राष्ट्रीय स्टेडियम एक नेशनल हाकी का बना दिया है।.... **(समय की घंटी)**

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह) : सलीम साहब आप सवाल पूछ लीजिए। काफी समय आपने ले लिया है।

श्री मोहम्मद सलीम : तो खेल के एक्सपेंशन के बारे में सरकार की क्या नीति है? ऐसे ज्यादा लोग जिनको खेल का मौका नहीं मिलता है, वे कैसे खेल में हिस्सा लेंगे?

दूसरी बात तरीका जो स्कूल एडोप्ट करता है। हमारे देश में कितने प्रतिशत बच्चे और बच्चियां स्कूल में जाते हैं या जिनको स्कूल में जाने का मौका नहीं मिलता है? बहुत से हैं जिनको शिक्षा के द्वारा अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करने का

मौका नहीं मिलता लेकिन वे खेल के जरिए फिजिकल कल्चर के जरिए अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित कर सकते हैं । उनके अन्दर से टेलेण्ट ढूंढने के लिए हमारा क्या तौर तरीका है ? आज ज्यादा प्रतियोगिता इंटर स्कूल और इंटर कालेज होती है लेकिन जैसा हमारे दूसरे साथी ने भी कहा गांव को भी एक यूनिट समझते हैं ब्लाक लेवल पर सब-डिवीजन लेवल पर अगर हम खेल की चर्चा जो हमारा इन्फा-स्ट्रक्चर है बनाएं, तो प्रतिभा मिल सकती है । रुपए कम होने के बावजूद भी जो हम उसे कुछ बड़े शहरों में बड़े स्टेडियम में, कुछ बड़े स्पोर्टस के नाम पर खर्च करते हैं लेकिन उसको डिसेंट्रलाइज करके नीचे की सतह पर जाकर ब्लाक लेवल पर, सब-डिवीजन लेवल पर जहां आपको नई प्रतिभा मिलेगी, उनको ट्रेनिंग देने के लिए उनको उठाकर सतह पर लाने के लिए आप क्या करने जा रहे हैं ? . . .

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह): श्री वाई० शिवाजी । . . . **(व्यवधान)** . . .

You have taken more than ten minutes, Mr. Salim.

श्री मोहम्मद सलीम : मैं खतम करता हूं सर । हम हजारों विषयों पर समय का यहां दुरुपयोग करते हैं और फिर पोस्टमार्टम कर रहे हैं । इससे पहले भी खेल में जाने से पहले हमने कोशिश किया । कई बार इस विषय को उठाना चाहा लेकिन मौका नहीं मिला । अब कम से कम मरी हुई, लाश को, तो पोस्टमार्टम करने दीजिए । जब जिन्दा थी तब तो आपने समय नहीं दिया इस बारे में बोलने का । . . . **(व्यवधान)** . . .

उपसभाध्यक्ष : अब मेरे आदेश को भी स्पोर्टसमैन स्पिरिट में ले लीजिए । समाप्त कर दीजिए ।

तो हमारी खेल के बारे में भी मिसप्लेस प्राइरिटि है । जो हमारे गांव के लोग हैं जो दौड़ते, भागते हैं । सर, जैसा मैंने कहा वैसे खेल के बारे में भी मीडिया का जो व्यवहार होता है हम कौन से खेल को पापुलराइज करते हैं । हमारे देश में अगर टेलीविजन देखें तो मोटर रैली या टेनिस अब तो क्रिकेट भी मिडिया का जरिया है, लेकिन क्रिकेट आज आम हो गया है । यह गरीब देश है जैसा हम कहते हैं रुपया-पैसा नहीं है तो कम उपकरण से, इक्विपमेंट से हम जो खेल खेल सकते हैं, हमारे ट्रेडिशनल खेल के साथ साथ और भी ऐसे बहुत से खेल हैं । इनको हम पापुलराइज कर सकते हैं, हम फिजिकल फिटनेस हासिल कर लेते हैं । ऐसे खेल के द्वारा, जहां कम इक्विपमेंट से काम हो सकता है । लेकिन, चर्चा ज्यादा होती है । उसके बाद अगर हम किसी खेल में भी उनको ट्रेण्ड करते हैं, स्किल देते हैं तो वह श्रेष्ठता प्रमाणित कर सकते हैं ।

सर, वैसे खेल हमारे देश की रग-रग में हैं । हमारे गांव के लोगों के अंदर हैं, हमारे आदिवासियों के अंदर हैं । उन खेलों को हम ज्यादा महत्व नहीं देते । मीडिया अथवा प्रचार माध्यमों को कम से कम इस तरह से व्यवहार करना चाहिए ताकि वह खेल खेलने वालों के अंदर जोश पैदा करे । जो सही चर्चा का विषय है, जो कम खर्च में हो सकता है, ऐसी चीजों के बारे में हमें ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है । . . . **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह): बस-बस काफी है । अब इतना छोड़ दीजिए । . . . **(व्यवधान)** . . . नहीं अब आप छोड़ दीजिए ।

श्री मोहम्मद सलीम : ट्रेनिंग देने के साईज जो स्कूल एडाप्ट करती है, उस स्कूल में अगर हम जाएंगे तो आप देखें मैदान के बारे में जो इन्विपमेंट के बारे में पैसा जो खर्च किया गया है । सिर्फ पैसा एलाट करने से नहीं होगा । उसका दुरुपयोग होता है या सदउपयोग होता है, इस बारे में सरकार को ध्यान रखना चाहिए । . . . **(समय की घंटी)** .

एक मिनट में अभी खतम करता हूं । नौजवानों की आवाज सुनिए । अब इतने दिनों बूढ़े लोग अपने देश को चला-चला कर इस स्थिति में ले आए हैं में नौजवानों की आवाज बोल रहा हूं । जैसा हमारे वरिष्ठ साथी सिकन्दर बख्त जी कह रहे मैं अपने खेल के तजुर्बे बता रहे थे, मैं भी इस देश के नौजवान की हैसियत से कह रहा हूं कि हमारे यहां मैदान पर फुटबाल खेलने के कारण पुलिस पकड़ कर

[श्री मोम्मद सलीम]

ले जाती है । सर, हमारे यहां कलकत्ता शहर में ब्रिगेड परेड ग्राउन्ड है, मैं जब स्कूल लैवल में पड़ता था उस वक्त का अनुभव बताता हूं । हमारी खेल मंत्री जी भी कलकत्ता शहर से आई हैं । सर, उनके लिए खेल-मैदान रिजर्व हुआ रखा है और वहां जब बच्चे खेलते थे तो फुटबाल खेलने से ज्यादा वह पुलिस को देखते रहते थे कि कब पुलिस आएगी और उन्हें खदेड़ देगी मैदान से क्योंकि वह मैदान रिजर्व किया हुआ था ।

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह) : डा० शिवाजी ।

श्री मोहम्मद सलीम : तो मैं यह कहता हूं हमारे दूसरे साथी भी कहे हैं कि खेल के बारे में ज्यादा समय, ज्यादा उत्साह देने के बारे में चर्चा की गई है । मैं यह पूछना चाहता हूं कि पिछले एक साल में खेल राज्य मंत्री महोदया ने खेल के बारे में खेल के दफ्तर में कितना समय दिया है? वह अगर थोड़ी-थोड़ी जो कोशिश है लगन है जो दौड़-भाग है वह अपने नाम को अखबार में लाने की कोशिश की बजाए अपने देश के नाम को मैडल लिस्ट में लाने की कोशिश करें तो बहुत अच्छा होगा । धन्यवाद ।

श्री मोहम्मद सलीम "معزی سنگال": اپ سبھا ادھیکش جی بارسیلونا میں بھارت کی جو ٹیم بھیجی گئی تھی اس کی ودیدھتا کے بارے میں سرکار نے اس کے بارے میں کیا کیا ہے اور کیا کرے جا رہی ہے اس کے بارے میں چرچا کرے جا رہے ہیں ۔

یہاں کچھ سدسیہ ابی ڈیفنس میں بھی کچھ سنا رہے ہیں کہ کون کتنا کس کھیل کو پسند کرتے ہیں یا کون کتنا کس کھیل کے لئے جڑے ہوئے ہیں یا کھیل سنگھٹن کے بارے میں بتا رہے ہیں ۔ اسی دھارنا کے انوسار منتری مہودیہ نے جو بیان دیا ہے اس میں ان سدسیوں کے ساتھ سہمت نہیں ہوں جو یہ کہتے ہیں کہ یہ بہت ہی سیلیبریٹڈ اسٹیٹمنٹ ہے ۔ ہم چرچا کر رہے تھے ۔ وشے تھا کہ بارسیلونا اولمپک کھیلوں میں بھارتیہ کھلاڑیوں کا پردرشن اور اس بارے میں سرکار دوارا کی گئی کارروائی ۔ پر ہم لوگ کیا دیکھ رہے ہیں کہ پہلے منتری مہودیہ نے بہت آشا بندھائی کہ بھارتیہ دل کا پردرشن براشا جنک رہا ہے ۔ پر نتو نراش ہونے کی کوئی بات نہیں ہے ۔

ہم نراش کس لیے نہیں ہوں گے ۔ پورا بیان لبارام ٹینس ہاکی کے بارے میں ہمارا پردرشن کیسا رہا ۔ جو اخبار کے ذریعے اور ٹیلی ویژن کے ذریعے ہمارے لوگوں کو معلوم ہو گیا ۔

منتری مہودیا ۔ ہماری چرچا کا دوسرا وشے جو تھا ۔ سرکار کی کارروائی اسکے بارے میں کچھ نہیں کہا ۔ نراش ہونے کا کارن نہیں کیونکہ آخر میں یہ کہا گیا ہے کہ ایرانڈیا کے ساتھ ایک راشٹریہ ہاکی اکادمی ۔ راشٹراسٹیڈیم میں بنائی جا رہی ہے ۔ سرکار کی کارروائی یہاں تک سمیت ہے ۔ صرف ایک لائن بتائی گئی ہے ۔ انہوں نے شروع کیا تھا کہ ہماری

† [ ]Transliteration in Arabic Script.

انوجیت کٹھن ہے۔ اس بیان میں منتری جی کہہ رہی ہیں۔ جبکہ اسی پیراگراف میں منتری جی یہ کہہ رہی ہیں کہ ہمیں شوٹنگ میں ہاکی میں اور آرچری میں پدک ملنے کی آشا تھی۔ تو کون غلط ہے۔ میڈیا یا ہمارے دیش کی ۸۶ کروڑ جنتا یا ہمارے دیش کے نوجوان اگر یہ امید کئے تھے۔ جو امید انہوں نے جگائی تھی کہ ہمیں کچھ ملنے کی آشا ہے۔ وہ کہتے ہیں انوجیت کٹھن اور اس لیے ایسا خاص کچھ نراشا جنک نہیں ہوا ہے۔ ایسے ہی ہونا تھا۔ ہم سمجھتے ہیں یہ بات ہی صحیح ہے کہ پدک کی کوئی آشا تھی ہی نہیں۔ کیونکہ ہم پدک کیلئے کوئی کوشش نہیں کئے تھے۔ لیکن کم سے کم اس چرچا سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ ہم کتنی گمبھیرتا سے اس معاملے کو لیتے ہیں۔ اب سبھا ادھیکش مہودے آج گیمس چاہے اسپورٹس کو ہندی میں ہم کھیل کہتے ہیں لیکن دیش میں اسپورٹس یا گیمس اور کھیل تماشہ نہیں رہا۔ ٹریننگ اسکیم اس کے ذریعے آج وہ دیش میں دیش پریم جگانے کیلئے۔ آج وہ اپنی خریشٹھتا برقرار کرنے کے لیے۔ راشٹریہ گورو استھاپت کرنے کے لیے مادھیم کی حیثیت سے دیو ہار کیا جاتا ہے۔ کیا ہماری سرکار کو اس بارے میں سوچ ہے۔ پچھلے پندرہ روز ایک پکش ہمارے دیش کے نوجوان بچے۔ جو بھوشکار ہی اور اس کے بارے میں ہمارے بعد میں کیا آشا رہیگی۔

ہم یہاں پر پوسٹ مارٹم کر رہے ہیں بیان کے مطابق۔ لیکن ہم نے جو چرچا شروع کرنی چاہی تھی۔ وہ یہ ہے کہ کھیل کے بارے میں سرکار کیا کاروائی کر رہی ہے۔ کھیل نیتی کے بارے میں کیا سوچ رہی ہے۔

ابھی دو سال کے بعد پھر ایک کھیل ہوگا۔ بارسیلونا اولمپک کے ایک سال پہلے سے اولمپک ایسوسی ایشن سے بات چیت کر کے جوائنٹ سلیکشن کے مطابق ٹیم بھیجی ہے۔ لیکن اسے بھیجنے سے پہلے آج دیش کے دربار میں اگر کھیل میں ہمیں پدک لینا ہے یا اپنی دیشیتا کا پرمان کرنا ہے۔ تو ہمیں صرف ٹیم بھیجنے سے یا کوچ سلیکٹ کرنے سے سرکار کا کام ختم نہیں ہوتا۔ بیان میں اس کے بارے میں کوئی بات نہیں ہے کہ ایک سال پہلے سے سرکار کو یہ درد تھا یا نہیں کہ ایک سال بعد بارسیلونا اولمپک ہونے جا رہا ہے۔

دوسرا بات یہ بیان میں خود کنٹراڈکشن ہے۔ ہم کہتے ہیں کہ ایک دوسرے کے اوپر دوش آروپن کر رہے ہیں کہ ایسے زیادہ کچھ نراشا جنک نہیں ہوا ہے۔ صرف میڈیا اور سدن میں چرچا کرتے سے ایک ایسا ماحول پیدا کیا گیا تھا کہ ہمیں پدک ملنے کی آشا ہے۔ جو

کچھ نہیں کہا گیا۔ لیکن باہر اخبار کے ذریعے یا ہماری چرچا میں بھی یہ وشے آیا منتری مہودے جی نے کہیں ہمارے راجیہ سبھا میں کہی۔ پرشن و اتر کے دوران کہی کہ پیسہ کم ہے روپیے کی کمی ہے۔ یہ ہم بالکل مانتے ہیں کہ اگر ہم اسے مہتو نہیں دیتے ہیں۔ اس میں اگر برا پرتی نہیں دیتے ہیں۔ پراتھمکتا ٹھیک نہیں کرتے ہیں۔ تو کیسے کرینگے۔ لیکن صرف پیسہ۔ تو سوری نام۔ اتھو پیا جو بھوکا مرا جا رہا ہے۔ کیوبا جو گھیرا ہوا ہے۔ ود اپنی استتھی پچھلی بار جب وہ اولمپک میں حصہ لیا تھا۔ تو ساتواں استھان تھا ٹیلی میں۔ اور وہ بھیجنے سے پہلے کہا تھا کہ ہم چھٹا استھان لینے کی کوشش کریں گے۔ اور وہ پانچواں استھان لیا ہے۔ وہ کتنے کروڑ روپیہ خرچ کر سکتا ہے۔ لیکن سوال یہ ہے کہ ہم وہ بھاؤ ناپیدا کر رہے ہیں یا نہیں۔ ہمارے کھیل راجیہ منتری کی فائیٹنگ اسپرٹ ہے۔ ایک لڑاکو کا جو بھاؤ ناہے ہم اس کا قدر کرتے ہیں۔ لیکن ہم یہ سمجھتے ہیں کہ کھیل کے میدان میں ہمارے جو کھلاڑی ہیں۔ ان کے اندر بھی یہ لڑاکو پن یا فائیٹنگ اسپرٹ پیدا ہونی چاہیئے۔ لیکن کیا ہوتا ہے۔ میں اسی اولمپک سے شروع کرتا ہوں۔ ہماری ٹیم بھیجنے سے جو کلریس لگتی ہے جو تو پاسپورٹ۔ ویسا ٹکٹ وغیرہ بھیجنے تک ہم اسے اتنا مہتو نہیں دیتے ہیں۔

بوڑھے اخبار روزانہ کھولیں اور روز ہیڈ لائن جو پڑھیں وہ صرف میڈک ٹیلی ہی نہیں کھیل کی پتریکا اخبار میں ہم یہ دیکھتے ہیں روزانہ جو "سارا جہاں ہم سے اچھا" اور ہم پھر راشٹریہ گورو کی بات کرتے ہیں۔ ہم ہمارے نوجوانوں کے اندر راشٹریہ بھاؤ ناپیدا کرنے کی بات کرتے ہیں۔ دیش پریم پیدا کرنے کی بات کرتے ہیں۔ ایک اتنا اچھا سا مادھیم جو کہ سرکار کے بھاشن سے نہیں۔ ٹیلی ویژن پر دی ہوئی یا لال قلعہ سے دیئے ہوئے پردھان منتری کے بھاشن یا راشٹرپتی کے بھاشن سے یہ اثر نہیں کرتا۔ اخبار میں نکلی ہوئی دو چار خبریں ہمارے دیش کے پرتی ندھی کرنے والے اپنی شریشٹھتا کا پرمان کئے ہیں۔ اس سے"..."مداخلت"... مہودے میں ابھی آ ہی رہا ہوں۔

اپ سبھا ادھیکش (شری شنکر دیال سنگھ): آپ سیدھے سوال پوچھ لیجئے۔

شری محمد سلیم: میں سوال ہی کر رہا ہوں۔ میں پہلے بیان سے اپنن جو سوال ہیں انھیں کو کہہ رہا ہوں۔ اب تک بیان سے باہر ہی نہیں گیا۔ ہم اسے اگر وہ گمبھیرتا دیتے ہیں۔ مہتو دیتے ہیں۔ کھیل کو کھیل مادھیم کو تو ہمارے جو بچے ہیں۔ ہمارے جو نوجوان ہیں۔ ان کے اندر ہم وہ بھاؤ ناپیدا کر سکتے ہیں۔ بیان میں روپیے اور پیسے کے بارے میں

علاوہ لیکن ہم دیکھتے ہیں کہ کھیل کے میدان میں اپنی شریشٹھتا پرمانت کر سکتی ہے ایسی شکتی۔ آج ہم دیکھیں۔ افریقہ کو ٹریک اینڈ فیلڈ میں اس کا کیا رزلٹ نکلا۔ جو ویسٹرن کنٹریز ہیں وہاں وہ کالے لوگ جو نیگلیکٹڈ ہیں۔ ان کے اندر یہ بھاؤنا ہمیشہ رہی ہے کہ وہ شریشٹھ بن سکتے ہیں لیکن سماج میں شکشا کے کارن ارتھ نیتی کارن انھیں پیچھے پھینکا گیا ہے۔ دھکیلا گیا ہے۔ صدیوں سے۔ اگر ہم ان کو ٹریننگ دیتے ہیں۔ اگر ان کو کھینچ کر نکال دیتے ہیں۔ انکے اندر وہ بھاؤنا تیار کرتے ہیں تو وہ اپنی شریشٹھتا پرمانت کر سکتے ہیں۔ لمبا رام۔ ایک لمبا رام نہیں ہے۔ ہمارے دیش میں آدی واسیوں کے اندر۔ جن جاتیوں کے اندر گاؤں کے اندر۔ پچھڑے علاقے میں ایسے لوگ ہیں جن کو بہت پرتی کولتا کے اندر زندگی بتانی پڑتی ہے۔ ہم اسے مہتو دیکر کے اس ٹیلینٹ کو اگر ہم ڈھونڈ کر نکالتے ہیں۔ اور اس کے بعد ٹرینڈ کرتے ہیں تو ہم کچھ کر سکتے ہیں۔ لیکن ہماری آزادی کے بعد سے تمام دیشوں کی طرح کھیل میں بھی اوور کنٹری بیوشن ہے۔ ہم کھیل میں کیسے آگے آئیں گے۔ بیان کر دیا کہ دلی میں راشٹریہ اسٹیڈیم ایک نیشنل ہاکی کا بنا دیا ہے...

سلیکشن پروسیجر سے ایسا ہوتا ہے کہ ایکدم آخر کار جا کر کے ہمیں معلوم ہوتا ہے کہ اس کو ہمیں بھیجنا ہے۔ یہ جانا ہے۔ ایرانڈیا ایک روز بعد پلیئرز کو کہے گی۔ ہم اگر اسکو جیسے کاروبار کی ٹرم میں جب بات کرتے ہیں۔ بزنس مین کی سنگل ونڈو کلیوینس کی بات ہونی چاہیئے۔ کھیل کے بارے میں جب انتر راشٹریہ پرتی یوگیتا میں ہم حصہ لیتے ہیں۔ تو اس کو ذرا مہتو دیکر کے جیسے ہمارے وی۔ وی۔ آئی۔ پی۔ ٹریٹمنٹ ملتا ہے۔ وی۔ وی۔ آئی۔ پی کے دورے کے سمے پر کہ جب راشٹر کے پرتی ندھی کی حیثیت سے باہر جاتے ہیں۔ تو سب ڈیپارٹمنٹ ایک جگہ ہو کر کے۔ اس کو وہ بھاؤنا تیار کرنے کے لیے کہ یہ دیش کیلئے پرتی یوگیتا میں جا رہا ہے۔ دیش کے لیے گورو کے لیے۔ وہ ہمیں تیاری کے اندر بھی یہ چیز رہنا چاہیئے۔ صرف پلیئرز کو قصور وار کر کے کوئی فائدہ نہیں ہے۔ چونکہ ہمارے دیش میں ہم یہ دیکھتے ہیں۔ سوشلسٹ کنٹریز۔ سی۔ آئی۔ ایس۔ کیوبا اس کے بارے میں نہیں جا رہا ہوں۔ ہمارے دیش میں ہی ہم اگر شریشٹھتا چاہتے ہیں۔ تو پہلی بات یہ ہے کہ ہمارے کھیل کا پھیلاؤ چاہیے۔ ایکسپینشن چاہیے۔ ہم کوالٹی گن نہیں لا سکتے۔ ایکسپینشن کے

کر کے نیچے کی سطح پر جاکر بلاک لیول پر۔۔۔ سب ڈویژن لیول پر۔ جہاں آپ کوئی پرتیبھا ملے گی۔ ان کو ٹریننگ دینے کے لیے ان کو اٹھا کر سطح پر لانے کیلئے آپ کیا کرنے جا رہے ہیں۔۔۔

اپ سبھا ادھیکش: شری دائی شواجی۔۔ "مداخلت"۔۔

شری محمد سلیم: میں ختم کرتا ہوں۔ سر ہم ہزاروں وشیوں پر سمے کا یہاں درپیوگ کرتے ہیں۔ اور پھر پوسٹ مارٹم کر رہے ہیں۔ اس سے پہلے بھی۔ کھیل ہیں جانے سے پہلے۔ ہم نے کوشش کیا۔ کئی بار اس رتنے کو اٹھانا چاہا۔ لیکن موقع نہیں ملا۔ اب کم سے کم مری ہوئی لاش کو تو پوسٹ مارٹم کرنے دیجئے۔ جب زندہ تھی تب تو آپ نے سمے نہیں دیا اس بارے میں بولنے کا "مداخلت"۔۔

اپ سبھا ادھیکش: اب میرے آدیش کو بھی اسپورٹس مین اسپرٹ میں لے لیجئے۔ سماپت کر دیجئے۔

شری محمد سلیم: تو ہماری کھیل کے بارے میں بھی مس پلیس پائیسرٹی ہے۔ جو ہمارے گاؤں کے لوگ ہیں جو دوڑتے ہیں بھاگتے ہیں۔ سر جیسا میں نے کہا ویسے کھیل کے بارے میں بھی میڈیا کا جو دیوہار ہوتا ہے۔ ہم کون سے "وقت کی گھنٹی"

اپ سبھا ادھیکش (شری شنکر دیال سنگھ): سلیم صاحب۔ آپ سوال پوچھ لیجئے۔ کافی سمے آپ نے لے لیا ہے۔

شری محمد سلیم: تو کھیل کے ایکسپینشن کے بارے میں سرکار کی کیا نیتی ہے۔ ایسے زیادہ لوگ جن کو کھیلوں کا موقع نہیں ملتا ہے۔ وہ کیسے کھیل میں حصہ لیں گے۔

دوسری بات۔ طریقہ جو اسکول اڈاپٹ کرتا ہے۔ ہمارے دیش میں کتنے پرتیشت بچے اور بچیاں اسکول میں جاتے ہیں۔ یا جن کو اسکول میں جانے کا موقع نہیں ملتا لیکن وہ کھیل کے ذریعے فزیکل کلچر کے ذریعے۔ اپنی سرشٹھا برقرار کر سکتے ہیں۔ ان کے اندر سے ٹیلینٹ ڈھونڈنے کیلئے ہمارا کیا طور طریقہ ہے۔ آج زیادہ پرتی لوگیتا انٹر اسکول اور انٹر کالج ہوتی ہیں۔ لیکن جیسا ہمارے دوسرے ساتھی نے بھی کہا۔ گاؤں کو بھی ایک یونٹ سمجھتے ہیں۔ بلاک لیول پر۔ سب ڈویژن لیول پر اگر ہم کھیل کی چرچا۔ جو ہمارا انفراسٹرکچر ہمیں بنانا ہیں۔ تو پرتیبھا مل سکتی ہے۔ روپیے کم ہونے کے باوجود بھی جو ہم اسے کچھ بڑے شہروں میں۔ بڑے اسٹیڈیم۔ کچھ بڑے اسپورٹس کے نام پر خرچ کرتے ہیں۔ لیکن اس کو ڈسٹریبیوٹ

... "مداخلت"...

اپ سبھاادھیکش: بس بس کافی ہے۔ اب اتنا بھوڑ دیجئے... "مداخلت"... نہیں اب آپ چھوڑ دیجئے۔

شری محمد سلیم: ٹریننگ دینے کے سائز جو اسکول اڈاپٹ کرتی ہے۔ اس اسکول میں اگر ہم آئیں گے۔ تو آپ دیکھیں میدان کے بارے میں۔ جو اکومنٹ کے بارے میں۔ پیسہ جو خرچ کیا گیا ہے۔ صرف پیسہ الاٹ کرنے سے نہیں ہوگا۔ اس کا دروپوگ ہوتا ہے۔ یا سدوپیوگ ہوتا ہے۔ اس بارے میں سرکار کو دھیان رکھنا چاہیے۔ "وقت کی گھنٹی"...

ایک منٹ میں ابھی ختم کرتا ہوں۔ نوجوانوں کی آواز سنیئے۔ اب اتنے دنوں بوڑھے لوگ اپنے دیش کو چلا چلا کر اس استھتی میں لے آئے ہیں۔ میں نوجوانوں کی آواز بول رہا ہوں۔ جیسا ہمارے درشٹھ ساتھی سکندر بخت جی کہہ رہے تھے۔ اپنے کھیل کے تجربے بتا رہے تھے۔ میں بھی اس دیش کے نوجوانوں کی حیثیت سے کہہ رہا ہوں۔ کہ ہمارے یہاں میدان پر فٹبال کھیلنے کے کارن پولیس پکڑ لے جاتی ہے۔ سر ہمارے یہاں کلکتہ شہر میں برنگیڈ پریڈ گراؤنڈ ہے۔ میں جب کھیل کو پاپولرائز کرتے ہیں۔ ہمارے دیش میں اگر ٹیلی ویژن دیکھیں تو موٹر ریس یا ٹینس اب تو کرکٹ بھی میٹروپا کا ذریعہ ہے۔ لیکن کرکٹ آج عام ہو گیا ہے۔ یہ غریب دیش ہے۔ جیسا ہم کہتے ہیں۔ روپیہ پیسہ نہیں ہے تو کم اپکرن سے۔ اکو منٹ سے ہم جو کھیل کھیل سکتے ہیں۔ ہمارے ٹریڈیشنل کھیل کے ساتھ ساتھ اور بھی ایسے بہت سے کھیل ہیں اکو ہم پاپولرائز کر سکتے ہیں۔ ہم فزیکل فٹنس حاصل کر لیتے ہیں۔ ایسے کھیل کے دوارا جہاں کم اکو منٹ سے کام ہو سکتا ہے۔ لیکن چرچا زیادہ ہوتی ہے۔ اس کے بعد اگر ہم کسی کھیل میں بھی ان کو ٹرینڈ کرتے ہیں اسکل دیتے ہیں۔ تو وہ شریشٹھتا پرماننت کر سکتے ہیں۔

سر۔ ویسے کھیل ہمارے دیش کی رگ رگ میں ہے۔ ہمارے گاؤں کے لوگوں کے اندر ہے۔ ہمارے آدی واسیوں کے اندر ہے۔ ان کھیلوں کو ہم زیادہ مہتو نہیں دیتے۔ میٹریا اتھوا پرچار مادھیموں کو کم سے کم اس طرح سے ویوہار کرنا چاہیے تاکہ وہ کھیل کھیلنے والوں کے اندر جوش پیدا کریں۔ جو صحیح چرچا کا وشے ہے۔ جو کم خرچ میں ہو سکتا ہے۔ ایسی چیزوں کے بارے میں ہمیں زیادہ دھیان دینے کی ضرورت ہے۔

اسکول ٹیول میں پڑھتا تھا۔ اس وقت کا الو بھوگ بتاتا ہوں ہماری کھیل منتری جی بھی کلکتہ شہر سے آئی ہیں۔ سرا کے لیے کھیل میدان ریزرو کیا ہوا رکھا ہے۔ اور وہاں جب بچے کھیلتے تھے تو فٹبال کھیلنے سے زیادہ وہ پولیس کو دیکھتے رہتے تھے کہ کب پولیس آئے گی اور انھیں کھدیڑ دے گی میدان سے۔ کیونکہ وہ میدان ریزرو کیا ہوا تھا۔

اپ سبھاادھیکش: ڈاکٹر شواجی۔

شری محمد علیم: تو میں یہ کہتا ہوں ہمارے دوسرے ساتھی بھی کہے ہیں۔ کہ کھیل کے بارے میں زیادہ سے زیادہ اتساہ دینے کے بارے میں چرچا کی گئی ہے۔ میں یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ پچھلے ایک سال میں کھیل راجیہ منتری مہودیا نے کھیل کے بارے میں کھیل کے دفتر میں کتنا سمے دیا ہے۔ وہ اگر تھوڑی تھوڑی جو کوشش ہے۔ لگن ہے۔ جو دوڑ بھاگ ہے۔ وہ اپنے نام کو اخبار میں لانے کی کوشش کے بجائے اپنے دیش کے نام کو میڈل لسٹ میں لانے کی کوشش کریں تو بہت اچھا ہوگا۔ دھنیہ واد

"ختم شد"

DR. YELAMANCHILI SIVAJI (Andhra Prdeash): Sir, the failure in the Barcelona Olympics is not for the first time, but it is for the third time since 1980 and it is due to the politicisation of the sports activity in this country. I fail to understand what Mr. Buta Singh was having to head the Amateur Athletics Federation of India. Then, how is Mr. Das Munshi found to be suitable to head the Football Association? I fail to understand how cycling, almost a private limited body, is headed by one of the senior IAS officers and the Gymnastics Federation is headed by the Chief Secretary of Haryana. For the last twenty-five years, he has been heading that organisation. Several Chief Ministers came into the organisation and went out of the organisation. But the Chief Secretary continues to head it. I fail to understand how Mr. "Titler" is eligible to head... (*Interruptions*)

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): He is "Tytler" and not "Titler".

DR. YELAMANCHILI SIVAJI: "Titler" or "Tytler", whatever it is. Proper nouns can be pronounced in any way. How is Mr. Tytler eligible to head Judo? Then, Wrestling is headed by one Mr. G. S. Munder. He is an IPS officer and happens to be the Director of Industrial Security Force. Hockey is headed by the M.D. of Indian Ailines. Archery is headed by an ex-M.P. for the last twelve years. (*Interruptions*) And then Volleyball is headed by Mr. Adityan. (*Interruptions*) Since all these organisations are headed by politicians, enough harm has been done for the sports activity in this country. Added to that, Mr. V. C. Shukla, who happens to be from Madhya Pradesh—I do not know what their angularities are in politics—is fuelling the dissident activity n sports. He is leading the dissident activity in the sports activity. He is encouraging the dissident activity. (*Interruptions*) I am glad that Mrs. Yayanthi Natarajan said that Mr. V. C. Shukla is leading the dissident activity everywhere not only in politics but also in sports and elsewhere. (*Interruptions*)

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: I didn't say that.

DR. YELAMANCHILI SIVAJI: I hope Mr Arjun Singh takes care of it. No legislation is warranted at all in order to

† [ ]Transliteration in Arabic Script.

bring improvement in these organisations. The Government can simply, by an administrative order or by an executive order, say that unless these organisations are democratised, they are not eligible to be recognised by the Government. It can solve the problem lock, stock and barrel.

The second point I would like to suggest is, let us form an electoral college consisting of the award winners or the national players. You create some quota for them—about seventy per cent of the electoral college may be from those people. Here, you can give certain percentage for the technical officers of the department, not necessarily for the IAS or the IPS officers but the technical officers who are heading the departments...another 5 per cent for the State and Central Government nominees and another 5 per cent for the public sector and private sector who are contributing for the welfare of the sports activities. You can do that. If you can do that, I hope that it can be solved. Sir, I would like to add that income tax deduction may be allowed to encourage the sports and I hope that Mr. Arjun Singh will take it up with Dr. Manmohan Singh and in spite of what Dr. Manmohan Singh says that there is no free lunch hereafter, I think, he will be more liberal so far as the sports are concerned.

Another aspect I would like to add is that whenever these sports activities or sports events take place, the Doordarshan collects more money in the form of advertisements. Let at least 50 per cent of the advertisement-revenue go for the encouragement of the sports events or the organisation that runs them. For these things, I do not see any reason to go in for a legislation. A simple executive order will do. I hope Mr. Arjun Singh will take courage not only to curb the dissident activities of his colleague from Madhya Pradesh but also to take up the matter with Dr. Manmohan Singh for getting tax reliefs and other things and this is the time to see that politicking in sports is eradicated lock, stock and barrel. Certain points have been mentioned by Mr. Salve regard to the Golf Club. Same is the practice in other stadia also at district levels and State levels. The State Government officials are playing havoc with these stadia, with their clubs and their functioning. A lot of illegal activity is going on in varoius Governmental clubs. So I would like to have the indulgence of the Minister in this regard.

श्रीमती चन्द्रिका अभिनन्दन जैन (महाराष्ट्र) : महोदय आपका मैं धन्यवाद करना चाहूंगी कि इस बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर आपने मुझे दो शब्द कहने का मौका दिया । बड़े भारी हृदय के साथ मैं इस विषय पर अपने विचार रख रही हूं । देश भर में हताशा की निराशा की और खेद की लहर फैल रही थी जब लोगों को पता चला टी०वी० पर देखा कि बर्सिलोना में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन इतना ठीक नहीं रहा । मैं भी इसमें एक स्पोर्टस वूमन होने की हैसियत से शामिल और शरीक होना चाहूंगी ।

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : मान्यवर, मैं आशावादी हूं, निराशावादी नहीं । . . . **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह) : बीच में मत बोलिए ।

श्रीमती चन्द्रिका अभिनन्दन जैन : जहां तक खेल कूद का ताल्लुक है मैं समझती हूं कि निराशा के घनघोर बादल छाए हुए हैं । मुझे आशा की किरण या लकीर नजर नहीं आती और जैसे अभी गौतम जी ने बताया कि वह निराशावादी नहीं हैं मैं भी यही कहना चाहूंगी कि मैं भी उन लोगों में से नहीं हूं जो निराशावादी हैं ।

मैंने यहां जो बहस सुनी एक ही ध्वनि, एक ही आवाज मुझको सुनाई दी कि जैसे पूरी की पूरी जिम्मेदारी सरकार की हो । हमारी यह कोशिश रहती है कि

[श्रीमती चन्द्रिका अभिनन्दन जैन]

अगर कहीं भी कमजोरी होती है तो उसमें सरकार के ऊपर आक्षेप लगाते हैं और अपनी जिम्मेदारी से छूट जाते हैं । बहुत कम उम्र से मैंने स्पोर्ट के साथ दिलचस्पी ली है, इससे ताल्लुक रखा हुआ है । ऐसा कहना मुनासिब हो जाएगा कि स्पोर्ट के लिए मैंने अपनी जिंदगी लगा दी थी जैसे बहुत सारे नौजवान खिलाड़ी अपनी जिंदगी लगा देते हैं । मैं समझती हूं कि हम हरएक इंसान की भारत में यह जिम्मेदारी है कि हम देखें कि हमारे देश में खेलकूद कैसे पनपते हैं? सिर्फ सरकार की ओर ऊंगली उठाने से काम नहीं बनेगा । ममता बनर्जी जो बड़ी होनहार मंत्री हैं और जिनको जोन आफ आर्क के नाम से पूरे देश भर में जाना जाता है उनकी तरफ आक्षेप की ऊंगली उठाने से काम नहीं बनेगा । हमारे खिलाड़ियों को बहुत सारी कठिनाइयों और परेशानियों का मुकाबला करना पड़ता है चाहे वह इंटरनेशनल स्टेंडर्ड के खिलाड़ी क्यों न हों। उनको बड़ा कठोर परिश्रम करना पड़ता है मेहनत करनी पड़ती है पसीना बहाना पड़ता है तब जाकर वह इंटरनेशनल स्टेंडर्ड पर पहुंचते हैं । यह मेरी खुशनसीबी रही है कि अलग-अलग क्षेत्र में रह रहे अनेकों खिलाड़ियों से मुझको बात करने का अवसर मिला है । कमलेश मेहता जी, जो टेबिल टेनिस पर अव्वल नम्बर पर हैं और नेशनल चेम्पियन बहुत सालों तक रह चुके हैं- उनसे बम्बई में जब मैं बात कर रही थी तो उन्होंने अपने परेशानियों का जिक्र किया । उन्होंने कहा कि कोई स्टेट स्पोंसरशिप नहीं मिलती है प्रमोशन नहीं मिलता है और इंटरनेशनल टूर्नामेंट में पार्टीसिपेट करने का जब मौका आता है तो सरकार नकार में ही जवाब देती है ।

ये नकारात्मक पालिसीज जो हमारी है, इन्हें हम दूर करें । बहुत सारे लोगों ने बातया कि बार्सिलोना में हमारा खराब प्रदर्शन रहा कि हम ओलंपिक में भाग लेना छोड़ दें । यह लोग वही लोग हैं जो इस तरह से बात करते हैं, न सिर्फ निराशाजनक बातें फैलाते हैं लेकिन उन को खेल-कूद को ए.बी.सी. भी पता नहीं है । जब तक हम ओलंपिक जैसे खेलों में पार्टिसिपेट नहीं करेंगे तब तक हम अपना स्टेंडर्ड सुधार नहीं पाऐंगे और हमें चाहिए कि जो भी इंटरनेशनल स्पोर्टस मीट्स होती है, टूर्नामेंट्स होते हैं, उसमें हम अपने खिलाडियों को भेजें ।

अनिता सूद बड़ी अच्छी स्विमर हैं, चैंपियन रह चुकी हैं । एशिया की अव्वल नबर की स्विमर हैं, इंग्लिश चैनल पार कर चुकी हैं । उन्होंने मुझे अपनी परेशानी बताई थी कि दूर-दूर मुझे जाना पड़ा, कंपनियों के दरवाजे खटखटाने पड़े कि मुझे आवश्यकता है कुछ धन की ताकि मैं इंग्लिश चैनल पार कर सकूं । ऐसे बहुत सारे किस्से मैं आपको बतना चाहती हूं लेकिन समय की पाबन्दी है । इसलिए मैं ज्यादा इसके ऊपर प्रकाश नहीं डाल पाउंगी । चारूलता मयगांवकर का किस्सा मुझे याद आता है नागपुर में । छोटी सी लडकी है । चार फीट दस इंच की भी नहीं है । उसके पांव में शूज तक नहीं हैं और वह मैराथन रनर है और देश के अव्वल मैराथन रनर्स में उनका नाम आता है । उन चारूलता मयगांवकर को जब मैं सरकार के पास लेकर गई कि इनको जांब दीजिए, इनको घर दीजिए, तब उसकी आंखों में आसू थे, मेरी आंखों में आंसू थे । हम कब तक इस हालत को बर्दास्त करेंगे, ये सवाल आज मैं आपके सामने रखना चाहूंगी ।

उपसभाध्यक्ष महोदय, बंबई के हालात क्या हैं ? बंबई की निवासी होने के नाते मैं आपको बताना चाहूगी कि कहा जाता है कि बहुत ही प्रीमियर सिटी है में खेल-कूद में प्रोत्साहन मिलता है । फील्ड और ट्रेक के लिए कोई भी सुविधा वहां पर उपलब्ध नहीं है । दिल्ली में आप देखते हैं तो पता चलता है कि यहां स्टेडियम बहुत बने हुए हैं लेकिन जब बंबई जाऐंगे, एथलोट जो रहते हैं, मैं टेबल टैनिस और बैडमिंटन की बात नहीं कर रहीं हूं, एथलीट्स जो फील्ड और ट्रैक पर भागते रहते हैं, उनके लिए यूनिवर्सिटी पैवेलियन के सिवा और कोई सुविधा नहीं है, उस बात पर हम जरूर ध्यान दें । इनडोर स्टेडियम की आवश्यकता है बंबई में । दो स्टेडियम वहां पर बने हुए हैं

क्रिकेट के लिए । साल्वे जी ने अभी बताया कि पोलिटिशियंस स्पोर्ट्स में नहीं आने चाहिए । पोलिटिक्स की वजह से ही बंबई में पांच मिनट के अंतर पर दो क्रिकेट स्टेडियम बने हुए हैं । कितना पैसा हम क्रिकेट के ऊपर लगायेंगे, कितनी जाहिरात हम क्रिकेट के ऊपर करेंगे, ये सवाल मैं आज आपके सामने रखना चाहूंगी ।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैंने चाहा था कि जब मंत्री महोदया यहां पर अपना स्टेटमेंट दें तो स्पोर्ट्स पालिसी के बारे में अपने विचार और ख्यालात उसमें यहां पर रखें । उन्होंने बीच में हमें एक सर-कुलर भेजा था और पूछा था कि आपकी क्या राय है, किस प्रकार से स्पोर्ट्स पालिसी बनानी चाहिए । मैंने एक बहुत ही लंबा पत्र उनको लिखा है और उसमें अपनी राय दी है । एक-दो सुझाव मैं यहां पर जरूर देना चाहूंगी और अपना छोटा सा वक्तव्य समाप्त करना चाहूंगी ।

जो टी.वी. पर हम समय देते हैं अलग-अलग कार्यक्रमों के लिए, ये मेरा मानना है कि जब तक हम उनके द्वारा स्पोर्ट्स का देश भर में प्रचार नहीं करते हैं और जब तक यह नहीं देखते हैं कि नौजवानों के खून में, उनकी रगों में स्पोर्ट्स बसता है, तब तक हम इंटरनेशनल मीट्स में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाएँगे । कम से कम 25 प्रतिशत समय आप स्पोर्ट्स को दें और जब मैं स्पोर्ट्स की बात करती हूं तो सिर्फ क्रिकेट की बात नहीं करती हूं । लाइव टेलीकास्ट जब हम करते हैं, छोटे-छोटे रणजी टूर्नामेंट भी हम दिखाते हैं लेकिन दूसरे सारे स्पोर्ट्स की क्या हालत है ? टेबल टैनिस है, चैस है, बैडमिंटन है । मैं चाहूंगी कि उनका भी लाइव टैलीकास्ट आप ठीक तरह से करें ।

वीमैन स्पोर्ट्स के बारे में जितना कहो, उतना कम है । बड़ी दुर्दशा है, बड़ी दुर्लक्षता की गई है वीमैन स्पोर्ट्स की । आपका बजट सीमित है, केंद्र सरकार का स्पोर्ट्स के लिए बजट सीमित है, राज्य सरकारों का स्पोर्टस के लिए बजट सीमित है फिर भी मैं चाहूंगी कि आप उसमें से 85 प्रतिशत धन और राशि महिलाओं के स्पोर्ट्स के लिए रखें । 85 प्रतिशत हमारी आबादी महिलाओं की है और अगर महिलायें विकास के रास्ते पर आगे बढ़ती हैं चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे खेल-कूद का क्षेत्र हो, तो समझ लीजिए कि पूरा देश विकास के रास्ते पर जाएगा ।

आखिर में मैं एक सुझाव देना चाहूंगी और अपना वक्तव्य समाप्त करना चाहूंगी मैं कहना चाहूंगी कि स्पोर्ट्स और योगा का बहुत ही नजदीक का संबंध है, ताल्लुक है ।

हम बातें तो बड़ी-बड़ी करते हैं कि हमारे देश का अध्यात्म के विकास की और हमेंशा से ध्यान लगा हुआ है, उसको जो पूंजी है, विरासत है वह अध्यात्म की है । जहां तक योगा का सवाल है स्पोर्ट्स में इसका बहुत ही खूबसूरत रीति से उपयोग किया जा सकता है । पाश्चात्य देशों में योगा के माध्यम से उनकी पर-फार्मेंस में बहुत ही सुधार हुए हैं । उसमें ड्रग्स लेने की आवश्यकता नही है । आवश्यकता इस बात की है कि योगा के माध्यम से चा वह मैडिटेशन के रूप में हो या आसनों के रूप में हो, अगर खिलाड़ियों को ठीक तरह से स्पोर्ट्स में प्रोत्साहन देना है तो योगा को स्कूलों और कालेजों में कंपलसरी करना होगा । जयहिंद ।

SHRI DAVID LEDGER (Assam): Mr. Vice-Chairman, Sir, the hon. Minister of State for Sports, Kum. Mamta Banerjee, has said in the statement that although the performance of the Indian contingent in the Barcelona Olympics has remained disappointing there is no reason to be despondent. I can appreciate the spirit behind such a statement. When the second largest country in the world, the second most populous country in the world fails to win a medal in the Olympic games while a small country like Cuba goes on to win 7 gold medals out of 12

[Shri David Ledger]

in Boxing, when the names of tiny Surinam and famished Ethiopia and even Kenya feature in the Medals Tally, there is definitely reason for concern and the people of this country are entitled to react in the manner in which they have. But when we come to think of it, the results of the Barcelona Olympics are hardly surprising because we are so used to coming back empty handed from the Olympic games. In fact, we have been coming back empty handed from the Oympic games for the last hrete successive times. This is not the first time. Sir, those who keep track of the Olympic games are busy today analysing the reasons for the debacle of the Indian players in the Barcelona Olympics. Some say that winning a medal is not important, participation is important. I personally consider such a theory as totally preposterous. Sir, Olympics is not an ordinary game, it is not a trial game. When you go to participate in the Olympics you have to be not only good but you have to be among the best. Participation for the sake of participation is not good enough. What is required in the Olympics is excellence. The highest standards of excellence. Sadly enough the members of the Indian contingent in the last Olympics or any other Olympics prior to that have failed to achieve this standard of execellence. I feel that one basic reason for the poor performance of the Indian players in the Olympic games is that most of the players are amateurs. There are very few professionals. Incidentally, the best performance in the Olympics came from Ramesh Krishnan and Leander Paes in Tennis, who are thorough professionals. They managed to reach the quarter finals. Being professionals they have greater discipline, they have greater commitment, and above all, they have the killer's instinct which the amateurs don't have. Today, I would like to say that there is a greater need to produce more and more professionals in the arena of sports in our country. Both the Ministers are present in the House. I hope they will give due importance to it. There are allegations that we don't have a proper system; we don't have a proper mechanism; we lack the necessary infrastructure; there is lack of sufficient funds. The Minister of State who is present here, was lamenting the other day in this House itself that the Government is giving only Rs. 40 crores to sports every year. They are giving Rs. 200 crores for the entire Five Year Plan. That means Rs. 40 crores per year. When you compare this amount of Rs. 40 crores with the amount which other countries are giving to sports, it is peanuts. I would like to conclude by saying that unless sufficient money is provided, unless sufficient money is raised for sports in this country, it will be impossible to evolve a proper mechanism and a system to provide the necessary infrastructure to train our sportspersons and to motivate them, to infuse into them the much needed motivation so that they can go on to win medals for this country.

SHRI BHUBANESHWAR KALITA (Assam): Mr. Vice-Chairman, Sir, at the first instance, I thank you for giving me this opportunity to take part in this Calling Attention Motion. Most of the points have been raised by the hon. Members and most of them have been discussed. Very few points remain to be raised in this House. Instead of our answering the points raised by us, since the Ministers are in the best know of things I would be glad if the Minister reacts in totality, in complete form. The diusappointment at the poor performance of the Indian contingent in the Olympics is nothing new. In fact, for the last 12 years, India has not won a single medal in the international arena. In this way we cannot become a major sports power in Asia, leave alone the world. This is a very unfortunate situation for a nation of 800 million. This major disaster happens every time we participate in the international arena of sports and after every such occasion criticisms are hurled against the Government because the Government is supposed to be the most convenient scapegoat. We blame the Government for almost everything under the sun although the story is different. There are sports associations. There are sports bodies, sports associations for every sport in this country and these sports are mainly controlled by private

blaming each other or making the bodies. Therefore, there is no use Government a scapegoat. What we really need to look into is what the Government and all those who are concerned about sports should do.

Sir, we see and we notice a lack of seriousness, it may be on the part of the sportsmen, it may be on the part of the Government or the sports officials. But there is a lack of seriousness and that is the truth. In Barcelona Olympics we have seen two types of participants. There were participants who went to Barcelona to win medals with all seriousness and there were countries who participated for the fun of participating and unfortunately we come under the second category. Sir, the Members have already said that it is not only finance and other things which are of much concern. We have examples where some of the runners up are from very poor countries, poorer than ours. There were bare-foot runners. There are countries like Cuba who came in the upper side of medal winners. We know what the situation in Cuba is. So it is another thing that we don't lack in those things. What we lack in is seriousness. The second thing is the lack of preparation. We see that training, selection and other things are made just four or six months before the Olympics. The time we need to spend on preparing our team, we spend it on other things. We prepare our team only six months before the Olympics. Threfore, this is aother reason as to why there was a poor performance by our participants in Barcelona. I want to say one thing about the officials. We don't see seriousness among the officials also. Reports have appeared in various magazines and newspapers that the officials were fighting for T-shirts and a place in the front row in the march-past. That is very unfortunate, Sir, we spend a lot of money on sports.

Money is spent not only by the Central Government but also by the State Governments. It is spent by the sports bodies, both public and private, and also by the general public who participate as spectors . . . (Interruptions).

SHRI V. GOPALSAMY: Not a lot of money. We are spending a very meagre amount.

SHRI BHUBANESWAR KALITA: I am not talking of the Government money. What Mr. Gopalsamy says is about the Government money . . . (*Interruptions*)

SHRI V. GOPALSAMY: All put together, it is not at all comparable with other countries.

SHRI BHUBANESWAR KALITA: As I told you, there are countries who spend even less than this, but have won medals So the Government must select its priorities and concentrate on some events where we can win medals. Again, why blame the sportspersons alone? We all know what sort of treatment the sportspersons who participate in these events get from the time of selection, training and participation in the Olympics. Sir, we bring coaches from outside the country. We spend a considerable amount of money on coaches. But one thing, how much time do they utilise to impart coaching to the players? I know about one game, badminton. We have brought one coach from China. Out of one-and-a-half years of his stay here in India, he has imparted coaching only for 45 days. Then, what is the meaning of keeping him for one-and-a-half years? I personally saw, when this coaching was being given, the players were playing badminton and the coach was playing videogames. Sir, I agree with the Minister that there is no cause to be despondent. But there has to be a serious concern from those who are responsible. We have to bring seriousness at all levels. Therefore, may I suggest a few things to the hon. Minister? Will the Government consider setting up a body like the All India Council for Sports, which was started by the architect of modern India, Jawaharlal Nehru, so that sportspersons of eminence would advise the Government? Also, will the Government encourage private bodies to adopt and train sportspersons in academies like the Tata Football Academy or the Amritsar Britannia Tennis Academy and others? With these words, I thank you, Sir.

श्री सिकन्दर बख्त (मध्य प्रदेश): सदर साहिब, मैं सिर्फ एक जुमला कह कर खत्म करूंगा, साल्वे साहब ने जो कुछ गोल्फ के बारे में कहा है, मैं अपने आपको इसके साथ एसोसिएट करता हूं ।

شری سکندر بخت "مدھیہ پردیش": صدر صاحب میں صرف ایک جملہ کہہ کر ختم کروں گا سالوے صاحب نے جو کچھ گولف کے بارے میں کہا ہے میں اپنے آپ کو اس کے ساتھ ایسوسی ایٹ کرتا ہوں۔

श्री गुफरान आजम (मध्य प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, हमारे देश वासियों की अजीज मेंटिलिटी है । हम हार को बर्दास्त नहीं कर सकते । जब भी हम, चाहें ओलम्पिक्स हो, चाहे एशियन गैम्स हों या किसी भी गेम में हम हारते हैं तो हम बड़ी चर्चा करते हैं, हमें बड़ा जोश आता है । जनता को भी, हमारे देश के कद्रदानों को भी और हमारे आनरेबल मेंबर्स आफ पार्लियामेंट्स को भी । लेकिन यह जोश सिर्फ चार दिन रहता है । मैंने देखा है कि उसके बाद फिर जोश तब आता है जब हम दुबारा हारते हैं, उससे पहले किसी को नहीं आता । यहां बडी चर्चा हुई कि फैडरेशन जिम्मेदार है, कोई कहता है ब्यूरोक्रेट्स जिम्मेदार है, कोई कहता है कि पोलिटीशियंस जिम्मेदार हैं । लेकिन इसके लिए आप और हम सब जिम्मेदार हैं । अपनी गिरेवान में मुंह डालकर देखें तो हम सब अपने आपको दोषी पायेंगे । मैं सिर्फ एक बात पूछना चाहता हूं कि यह बतलाइए आपमें से कितने ऐसे लोग हैं जो ईमानदारी से अपने लड़कों को स्पोर्टसमैन बनाना चाहते हैं, या बनाने की कोशिश करते हैं ? 80–86 करोड में से इस देश में सिर्फ 5 हजार स्पोर्ट्समैन हैं । कौन प्रोत्साहित करता है आजकल खेलने के लिए, कोई नहीं करता है । मैंने देखा है कि ओलम्पियन्स के लड़के भी, मैं अपने को हाकी तक सीमित रखता हूं क्योंकि हाकी में मेरा ज्यादा इंटरेस्ट रहा है । जो ओलम्पियन हो गए मैंने उनसे पूछा कि तुम्हारा लड़का अच्छा है, उसकी अच्छी फिजिक है, उसको हाकी क्यों नहीं खिलाते लेकिन नहीं खिलाते हैं । जो खेलकर रिटायर हुआ, मैंने सारे कप्तानों से बात की, हमारे यहां जो हाकी के कप्तान हुए, अजीतपाल से लेकर जफर इकबाल तक, उनसे कहा कि भई आप लोग इसमें इंटरेस्ट क्यों नहीं लेते । कोचिंग हो रही है आप जाकर मैदान में देखिए कि कैसी कोचिंग हो रही है, थोड़ा इसमें इंटरेस्ट लें, लेकिन वे जैसे ही रिटायर हुए घरों में बैठ जाते हैं । कोई उसमें इंटरेस्ट नहीं लेता, प्लेयर बनाने की कोशिश नहीं करता प्लेयर इतनी आसानी से तो नहीं बनते जितना आसानी से हम यहां डिसक्शन कर लेते हैं । इसके लिए डेडीकेशन चाहिए, डिवोशन चाहिए, लेकिन यह कोई देने के लिए तैयार नहीं हैं । एक दूसरे पर हम आरोप लगा रहे हैं । मुझे यह बतलाइए कि इसमें फैडरेशन की कहां जिम्मेदारी है ? फैडरेशन का काम क्या है । उसका काम यह है कि थ्रू-आउट कन्ट्री नेशनल गेम हों और उसके बाद जितने टूर्नामेंट हों वहां जितने अच्छे प्लेयर देखें उनको बुलायें और जो उनको बेस्ट लड़के मिलें, बैस्ट प्लेयर मिलें उनका सलेक्शन करके कोच के हवाले कर दें और कोच उनको ट्रेनिंग दें । लड़के जितना उनका गेम है उतना ही खेलेंगे । ऐसा कोई इंजेक्शन ईजाद नहीं हुआ कि लगा दो और वे खेलने लगेंगे । जितनी उनकी गैम है, जितना उन्होंने सीखा है, उतना ही वे खेलते हैं । . . . (**व्यवधान** . . .)

तो मैं यह कह रहा था कि इसकी जिम्मेदारी स्टेट गवर्नमेंन्टस की है । देखिए, बेसिक, जो बुनियाद है वह है स्कूल । फैडरेशन बुनियाद नहीं है । फैडरेशन की यह जिम्मेदारी नहीं है, यह जिम्मेदारी है स्कूलों की । आप यह देखिए कि कितने ऐसे स्कूल देश में हैं, जिनके पास ग्राउंड्स हैं । हर स्कूल में, मैंने देखा कि आपका आन पेपर, दिखाने के लिए पी.टी.आई. हैं, यह दिखाने के लिए कि स्पोर्ट्स में दिलचस्पी ली जा रही है

†[ ] Transliteartion in Arabic Script.

इसके लिए उन्होंने एक एक पी०टी०आई० नियुक्त कर दिया । लेकिन वहां पी०टी० आई. तो मौजूद है लेकिन खेलने के लिए ग्राउन्ड नहीं है । तो वह किस जगह उनको खिलाएगा । आन पेपर आपने कहा है कि पी०टी० आई० है । आन पेपर कहते हैं कि स्कूलों में कम्पीटीशन होता है । कंपीटीशन के मामले में हमने यह देखा, फिर एक्जांपल हाकी का है कि हर स्कूल कंपीटीशन में पार्टिसिपेट करेगा लेकिन किसी भी स्कूल का 500, हजार या दो हजार से ज्यादा बजट ही नहीं है । हाकी की स्टिक आती है 300 रुपए या 200 रुपए की, बाल आती है 150 रुपए की । हाकी खासतौर पर इस कंट्री के मिडिल क्लास फैमिली के लडके खलते हैं । यह बेसिक चीज जो बुनियाद है हाकी की वह यह है । जब वहां से बच्चों को स्टिक ही नहीं मिल रही है, खेलने के लिए ग्राउन्ड भी नहीं है तो वह कैसे खेलेगा ? अब टोटल हाकी इण्डिया की क्या है, यह भी सुन लीजिए । जिस स्कूल का जब कम्पीटीशन हुआ तो पी० टी०आई० ने कहा कि यह स्कूल पार्टिसिपेट नहीं करेगा तो मुझ से पूछा जाएगा । तो उन्होंने बच्चों से कहा कि तुम लोग फलां तारीख को फलां ग्राउन्ड पर पहुंच जाओ, तुम्हारा मैच है । चपरासी ने हाकियां साईकिल पर रखीं और ग्राउन्ड पर पहुंच गया । वहां पर बच्चों को हाकियां दे दी गईं । मैच होने के बाद सब हाकियां बच्चों से वापिस ले ली गईं । (**समय की घंटी**) साहब यह तो इतना इम्पोर्टेंट है, आप टोकेंगे तो (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह) : यह इम्पोर्टेंट है लेकिन समय सब से ज्यादा इम्पोर्टेंट है ।

श्री गुफरान आजम : मैं हाकी की बात इसलिए कर रहा हूं कि हमें अगर गोल्ड मेडल मिलने की अभी भी संभावना है तो वह हाकी से ही मिल सकता है ।

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह) : गफरान आजम साहब आप मेरी बात सुनिये । (**व्यवधान**)

श्री अजीत जोगी : उपसभाध्यक्ष जी, यह वाइस प्रेजीडेंट हैं इनको बोलने दीजिए (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह) : मैं अच्छी तरह से जानता हूं लेकिन मेरा यह कहना है कि इसमें समय मुकर्रर रहता है । पांच मिनट के अन्दर आपको सवाल पूछने हैं ।

श्री गुफरान आजम : मैं यह कह रहा था कि वहां से हाकी शुरू होती है । फिर होते हैं इंटर स्कूल्ज । इंटर स्कूल्ज में दो रोज बच्चे हाकी खेलते हैं फिर वहां से हो जाते हैं आल इंडिया स्कूल्ज के लिए जिसमें से उनकी टीम बनती है । अब आप मध्य प्रदेश को एक्जाम्पल के लिए ले लीजिए । स्कूल में पांच सात रोज प्रेक्टिस करेंगे । वहां से आल इंडिया कम्पीटीशन में चले गये । स्कूल लेवल पर इतनी ही हाकी हमारे यहां खिलाड़ी खेलते हैं । कालेज लेवल पर थोड़ी ज्यादा है । कहीं कहीं कालेज में ग्राउंड हैं वरन मेजोरिटी आफ कालेजेज के पास ग्राउंड भी नहीं हैं । वहां से चले जाते हैं इंटर यूनिवर्सिटी कम्पीटीशंस में । फिर आ जाते हैं कम्बाइंड यूनीवर्सिटी में । तो एक साल में दो महीने खेलने के बाद कम्बाइंड यूनीवर्सिटी टीम बन जाती है । जब आल इंडिया सेलेक्शन कमेटी की मीटिंग होती है तो कम्बाइंड यूनिवर्सिटी टीम में से चार लड़कों को ले लिया । यह तो आपका स्टेंडर्ड रह गया है । इसकी जिम्मेदारी किसी फेडरेशन की, सरकार की, किसी की नहीं है । इस देश के नागरिकों की जिम्मेदारी है । कोई भी अपने बच्चे को प्लेयर बनाने में इंट्रेस्टेड नहीं है । मैं कोई अपनी बड़ाई नहीं कर रहा हूं । मैं अपने सात साल के बच्चे में इंट्रेस्ट लेता हूं और मैं चेलेंज करता हूं कि मैं इंडिया की ओर से उसको खिला कर दिखाऊंगा । मेरी बीबी भी इंट्रेस्ट लेती है । बच्चा चाहता है कि वह वीडियो गेम देखे यह फेक्ट है वह चाहता है वीडियो गेम देखना, सुबह का टी०वी० देखना चाहता है लेकिन हम उसको यह नहीं देखने देते हैं । हम यह कहते हैं

[श्री गुफरान आजम]

हैं कि तुम्हें ग्राउंड पर जाना है । जब तक इस देश के सारे लोग ईमानदारी से इंट्रेस्ट नहीं लेंगे तो किसी भी हालत में... (व्यवधान)

श्री भुवनेश चतुर्वेदी (राजस्थान) : उसको आप एम०पी० बनवा देना (व्यवधान)

श्री गुफरान आजम : एम०पी० बाद में बन जाएगा । अब सवाल यह है कि सरकार को थोड़ा सा मैं कहना चाहता हूं । कुछ बातें जो मैंने मार्क की हैं जो गलतियां स्पोर्ट्स अथार्टी में हैं स्पोर्ट्स मिनिस्ट्री में हैं मैं यह चाहता हूं कि आप उन गलतियों को दूर करें । देखिये हम चाहते हैं कि हमारा कोच हो, नेशनल कोच हमारी च्वाइस का हो जो हमारे कहने से टीम को कोच करे । हम पर एस०ए०आई० का नेशनल कोच थोप देते हैं । मैंने एक दफा यह कहा कि उधम सिंह को नेशनल कोच बना दिया जाए वह हमारी टीम को कोच करेगा । एस०ए०आई० ने कहा कि वह नेशनल कोच इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि उसकी पीठ पर एन०आई०एस० का ठप्पा नहीं है । जो आदमी देश के लिए चार गोल्ड मेडल ले कर आया है जिसके शागिर्दों के शागिर्द सिर्फ कुछ दिन कोर्स करने के बाद एन०आई०एस० हो गये उनको तो कोच बनाने के लिए सरकार तैयार है लेकिन उधम सिंह को कोच बनाने के लिए तैयार नहीं है । आप को याद होगा कि इस टीम के साथ बार्सिलोना में मेनेजर हो कर मैं जा रहा था लेकिन मैंने रिफ्यूज कर दिया । मेरे रिफ्यूज करने की वजह यह थी कि मैं कोच से एग्री नहीं करता । टोटल हाकी आज तक मेरी समझ में नहीं आई । उन्होंने हाकी इन टोटल कर दी । एस०ए०आई० हम पर कब थोप देती है । कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिनकी फेडरेशन की जिम्मेदारी है उसकी जिम्मेदारी आप पूरी फेडरेशन को दीजिए । कोच साहब ने कहा कि मैं एक्सपेरीमेंट करना चाहता हूं टोटल हाकी । उन्होंने एक्सपेरीमेंट में हाकी का नाश कर दिया । हम कुछ बोल नहीं सकते हैं । हम अप्वाइंटेड नहीं हैं । हमसे कोई वास्ता नहीं है । आप उनको पे देते हैं इसलिए वह आपकी बात मानता है । हमारी बात कोई नहीं मानेगा फेडरेशन की बात नहीं मानेगा और जवाबदार फेडरेशन है । तो कुछ जगहें ऐसी हैं जहां आपको गम्भीरता से सोचना चाहिए । फैडरेशन के लोगों से बात करनी चाहिए कि उनकी क्या समस्यायें हैं उनसे पूछकर और सारी बातें अपनी नोलिज में लाने के बाद क्या हमने कोई ब्लू प्रिंट बनाया है ? हम कैसे सुधारना चाहते हैं । पूछो तो, मिलो तो, बुलाओ तो यह तो कुछ होता नहीं । उपसभाध्यक्ष महोदय, आप बार-बार घंटी बजा रहे हैं । इसके लिए तो मुझे आधा घंटा चाहिए । अगर मंत्री जी कहें तो मैं उनके चैम्बर में जाकर उनकी पूरी स्कीम समझने को तैयार हूं । धन्यवाद ।

श्री दिग्विजय सिंह (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, आज जब इस राज्य सभा में हम सारे लोग बैठकर बार्सिलोना ओलंपिक के बारे में चर्चा कर रहे हैं तो उसका सिर्फ एक ही मतलब है कि यह देश सबसे ज्यादा निराश हुआ है । खेल को खेल भावना से जोड देना, कहना तो बहुत आसान होता है लेकिन 15 दिन तक लगातार बार्सिलोना में रात के दो बजे तक लोग जग जग कर टेलीविजन देखते रहे इस उम्मीद में कि कहीं हमारा देश एक मैडल पाएगा, कोई उम्मीद दिखेगी । हम हर बार निराश होकर आज 15 दिन के बाद संसद में इस बात की चर्चा कर रहे हैं तो उसका सिर्फ एक मतलब है कि पूरा देश आज इस बार्सिलोना से निराश हुआ है । इसलिए, उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी के बयान के बारे में चर्चा करना चाहूंगा ।

इस बयान में कहा गया है कि सिर्फ शूटिंग, आर्चरी और हाकी ये खेल की तीन ऐसी जगहें थीं जहां हमें पदक की कोई उम्मीद थी । दो बातों की चर्चा हो चुकी है, हाकी और आर्चरी की, मैं अपने को सिर्फ शूटिंग तक सीमित रखूंगा । शूटिंग

एक कम्पटीशन है कि जिसमें आज दुनिया में सबसे ज्यादा गोल्ड मैडल्स की तालिका जुड़ी हुई है और शूटिंग में यहां पर एक एसोसिएशन है, नेशनल राइफल एसोसिएशन आफ इंडिया जो उसकी देखभाल करती है जिसके तहत शूटिंग कंपटीशन्स यहां प्रमोट हो रहे है। मैं जानना चाहता हूं कि पिछले वर्षों में क्या नेशनल राइफल एसोसिएशन आफ इंडिया को एक भी आर्म खरीदने की इजाजत भारत सरकार की तरफ से मिली है या नहीं मिली है। मैं इसी सदन में एक बार माननीय अर्जुन सिंह जी से निवेदन कर रहा था कि पिछले पांच वर्षों से हमने कारतूसों के लिए दरख्वास्त दे रखी है आपके विभाग में, आज तक उस पर भारत सरकार यह फैसला नहीं कर पाई है कि कामर्स मिनिस्ट्री में उसे भेजा जाए या नहीं भेजा जाए।

श्री गुफरान आजम : मैंने भी दरख्वास्त दी थी तो मुझे 15 कारतूस दिए। ये 15 कारतूस आप ले लीजिए।

श्री दिग्विजय सिंह : मैं यह अर्ज कर रहा था कि आखिर सरकार किस सीमा तक फैडरेशन को मदद करने के लिए तैयार है। आज से एक दिन पहले खेल मंत्री ने लोक सभा में देश को बता दिया कि हम क्या करें सिलेक्शन तो सिर्फ फैडरेशन वाले करते हैं। मैं मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि क्या भारत सरकार के प्रतिनिधि वहां पर नहीं होते हैं? क्या भारत सरकार ने तय नहीं कर दिया है कि अर्जुन अवार्डी उस कमेटी का मैम्बर होगा? खेल में जीते तो मंत्री जी यहां वाहीवाही लें, खेल हार जाए तो कहा जाए कि फैडरेशन गलत करती है। राजनीति को जोड़ने का काम पिछले कुछ वर्षों से यहां की फैडरेशन के साथ हुआ इससे मैं इन्कार नहीं करता। मैं स्वय दो बार ओलंपिक एसोसिएशन की मिटिंग में गया और दोनों बार—अभी जो आदित्यन साहब जहां अध्यक्ष बने वहां भी मारपीट हुई, उससे पहले कालीकट में एक ओलम्पिक एसोसिएशन की बैठक हुई वहां भी मारपीट हुई। जहां हम इस शर्म के साथ अपने खेल अध्यक्षों का चयन कर रहे हैं ...(**व्यवधान**) जहां खेल का सबसे बड़ा संगठन इस कायदे से चुना जा रहा है वहां के खेल के बारे में क्या कहें, इसका जिक्र करना आज मैं मुनासिब नहीं समझता हूं। आज तो सिर्फ सरकार से यही गुजारिश करना चाहता हूं कि क्या सरकार सचमुच इस देश में खेल को आगे बढ़ाने के लिए सचेत है या नहीं।

एक बात में मैं साल्वे साहब से बिल्कुल सहमत हूं कि यह कोई राजनीति का मामला नहीं है। सरकार में आप भी रहेंगे, सरकार में हम भी रहे हैं, सरकार दूसरे लोग भी चला रहे हैं। खेल अपनी जगह पर मौजूद है। मगर एक बात तय होनी चाहिए कि क्या इस देश में वही सोच विचार चलता रहेगा, जिसका जिक्र गुफरान आजम साहब कर रहे थे।

इस देश में जब हम स्कूल में थे तो कहा जाता था कि खेलोगे कूदोगे तो होगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे तो होंगे नवाब। यह मानसिकता इस देश में घर कर गयी है और गुफरान साहब आप बिल्कुल सही बात कर रहे थे कि हममें से कोई भी आदमी सच्चाई से अपने लड़के को खेल की तरफ प्रोत्साहित करने के लिए तैयार नहीं है। यह एक मानसिकता, यथार्थ इस देश अंदर है। इसलिए मैं माननीय अर्जुन सिंह जी से और ममता बनर्जी जी से दरख्वास्त करूंगा कि आपके हाथ में जब खेल विभाग है तो आपकी यह जिम्मेदारी है, मैं कोई दोष के लिए नहीं कह रहा हूं मैं इस जिम्मेदारी का अहसास आपको करा रहा हूं कि आप इस देश में एक ऐसा माहौल बनायें, जहां खेलों के लिए लोगों के अंदर एक जागरूकता पैदा हो। एक ओर तो बार्सीलोना ओलंपिक हो रहा था, दूसरी ओर इसी देश में पांच वर्ष बिलियर्ड चैम्पियनशिप जीता हुआ व्यक्ति भूखों मर रहा था, दवा के बिना मर रहा था। (**समय की घंटी**) क्या गारन्टी है हमारे देश में खिलाड़ियों के लिए? कौनसी नौकरी हम देते हैं? कुछ बड़े पूंजीपतियों के भरोसे हम छोड़ देते हैं। टाटा में नौकरी मिल जाए,

[श्री दिग्विजय सिंह]

बिरला नौकरी दे दें, यही खिलाड़ियों को यहां पर मिलता है ।

इसलिए, उपसभाध्यक्ष जी, ज्यादा समय नहीं लेते हुए खेल मंत्री जी का दो-तीन बातों की तरफ ध्यान खींचना चाहूंगा । एक तो मैं उनसे यह जानना चाहूंगा कि ग्रामीण इलाकों में, जहां से खिलाड़ी पैदा होता है—हाकी का जिक्र आ रहा था—छोटा नागपुर एक ऐसा इलाका था इस देश के अंदर, जहां से चार-चार, पांच-पांच खिलाड़ी हाकी के मैदान में खेला करते थे । आज मैं देखता हूं कि टीम में वहां के लोग आने बंद हो गए इसलिए कि खेल का सामान इतना महंगा हो गया । खेलने की जो ताकत उसमें पैदा हो सकती थी, उस गरीब इलाके में, अब वह पैदाइश नहीं रह गई है ।

इसलिए मैं चाहूंगा कि सरकार इस ओर ध्यान दे । **(समय की घंटी)**

दूसरी बात जो मैं आपसे कहूंगा कि फैडरेशन के साथ आपका व्यवहार क्या होता है, यह तो मुझे मालूम नहीं, सरकार के मंत्री का व्यवहार क्या होता है, यह मुझे मालूम नहीं, लेकिन अधिकारियों का जो व्यवहार है, वह यथावत है । पांच-छह वर्षों से लगातार उनके दरवाजे पर दस्तक दी जाती है, लेकिन कोई न कोई कानून का अड़ंगा, कोई न कोई कानून का बहाना बना कर फैडरेशन को तंग किया जाता है ।

मंत्री जी अगर आप इस विभाग को देख रही हैं, तो यह आपकी जिम्मेदारी है कि आपके अधिकारी, आपके पदाधिकारी इस ओर अपने को थोड़ा सीमित दायरे में रखें और अगर नहीं रख सके तो आप मंत्री रहें या न रहें, उनका राज तो चलता रहेगा । कल दूसरा मंत्री भी आएगा, तो तरीके यही होंगे ।

अंत में मैं आपसे एक गुजारिश करना चाहूंगा कि बहुत से खेल स्टेडियम दिल्ली शहर में बने हुए हैं—इंदिरा जी के नाम से हैं, जवाहरलाल जी के नाम से हैं । इन्होंने अपने-अपने तरीके से राजनीति में रहने के बावजूद भी खेल को प्रोत्साहन दिया । मेरा कोई विरोध नहीं कि उन नाम से यह स्टेडियम न रहें । लेकिन किसी खिलाड़ी के नाम से एक भी स्टेडियम दिल्ली शहर के अंदर मौजूद नहीं है । शिवाजी तो बड़े आदमी थे, स्टेडियम उनके नाम से रखने की क्या जरूरत है—पूरा देश तो उनको जानता है । अगर नाम होता ध्यान चन्द जी का, नाम होता रूप सिंह जी का—के० डी० सिंह बाबू के नाम से लखनऊ में एक है । दिल्ली शहर में शायद ऐसा कोई स्टेडियम नहीं है । इसलिए मैं एक गुजारिश आपसे करूंगा कि इस देश में एक नामी निशानेबाज दुनिया के स्तर पर पैदा हुआ था, जिसका नाम था डा० करणी सिंह जी—तुगलकाबाद शूटिंग रेंज शायद तुगलक के नाम से जाना जा रहा है । इसलिए अगर सरकार कुछ खिलाड़ियों के लिए प्रोत्साहन देना चाहती है, तो तुगलकाबाद शूटिंग रेंज का नाम कम से कम डा० करणी सिंह जी के नाम से रख दिया जाए, ताकि यह हो कि जो दुनिया के स्तर पर खिलाड़ी पैदा हों, दुनिया के स्तर पर खिलाड़ी आगे बढ़ता हो, उसको देख, देश उसका ठीक प्रोत्साहन करने को तैयार है ।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद देता हूं ।

SHRI N.K.P. SALVE: I associate myself with the demand made by him of naming the shooting range after Dr. Karni Singh.

श्री संघ प्रिय गौतम : महोदय, मुझे सिर्फ मिनट का समय दे दीजिए । . . . **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह) : नो ।

श्री संघ प्रिय गौतम : अच्छा, एक मिनट का ही दे दीजिए ।

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह) : इनकी बात सुन लीजिए । उसके बाद कुछ बातें बच जायेंगी—सवाल ।

कु० ममता बनर्जी : सर मैं हर माननीय सदस्य की आभारी हूं । जो डा० जैन साहब ने, सिकन्दर बख्त जी ने गोपालसामी जी ने, गुरुदास दासगुप्त जी ने, मोहम्मद सलीम जी ने, आपने खुद, शंकर दयाल सिंह जी ने . . . **(व्यवधान)**

[उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) पीठासीन हुए]

श्रीमती चंद्रिका जी, लेजर जी, भुवनेश्वर कालिता जी ने, गुफरान जी ने और दिग्विजय सिंह जी ने जो डिस्कशन किया और सुझाव दिया है, मैं अपने डिपार्टमेंट की ओर से आप लोगों को बधाई देना चाहती हूं ।

यह बात सच है सर, जिन्होंने चर्चा में भाग नहीं लिया है, लेकिन सुना है और इसमें इंट्रेस्ट लिया है, मैं उन माननीय सदस्यों को भी बधाई देना चाहती हूं । मैं उसके लिए आभारी हूं ।

एक माननीय सदस्य : हमको ज्यादा ।

कु० ममता बनर्जी : जिन्होंने भाग नहीं लिया है, लेकिन सुना है उनके लिए भी मैं आभारी हूं ।

सर, यह बात सच है कि जैसे हमारे माननीय सदस्यों को दुख पहुंचा है, हमारे हिंदुस्तान में हर आदमी को दुख पहुंचा है । मैं भी हिन्दुस्तान में रहने वाली हूं । मुझे भी ऐसा ही दुख पहुंचा है । ओलिंपिक टीम जिस दिन बाहर जाने के लिए तैयार थी, उसके पहले दिन अर्जुन सिंह जी और मैं खुद गई थी, हर प्लेयर के साथ इंडिविज्युअली हम लोगों ने बात की थी । उसके पहले दिन उन्हें बुला कर कहा कि आप लोग ओलिंपिक जा रहे हैं, आप बोलिए अगर आपको कुछ कमी है, तो हमें बतायें, जो भी मदद करनी है, हम लोग खुद करेंगे ।

हम लोगों ने इंडिविज्युअली बात की थी ।

यह तो सच है कि हम लोगों को एक भी मैडल नहीं मिला है . . . .

लेकिन मैं हिन्दी, सर, अगर मेरे को हिन्दी का कोई गलती हो जाए तो मैं मुआफी मांगती हूं . . . **(व्यवधान)** . . .

4.00 P.M.

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : ठीक है ।

SHRI V. GOPALSAMY: Please speak in English.

KUMARI MAMTA BANERJEE: Let me learn some Hindi also.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Please allow her to speak in the language in which she wants to speak.

SHRI V. GOPALSAMY: It will be better if she speaks in English.

KUMARI MAMTA BANERJEE: I will speak in Hindi and in English also.

SHRI V. GOPALSAMY: Very good. You can do it simultaneously?

SHRI T. A. MOHAMMED SAQHY (Tamil Nadu): Let her not strain herself.

KUMARI MAMTA BANERJEE: Now, let me concentrate.

खेल-कूद में कंसेंट्रेशन सब से ज्यादा जरूरी है । सर, दुख हम सब लोगों को पहुंचा है, लेकिन बात यह भी सच है कि सर, इस दफा ओलंपिक के बारे में दो वर्ष पहले हम लोगों ने कोचिंग शुरू की थी, ट्रेनिंग भी दी थी । हिन्दुस्तान के अंदर में फेडरेशन ने आई. ओ. ए. और साई (S.A.I.) का एक साथ में जो ट्रेनिंग और कोचिंग हुआ था उसमें हमने 50 लाख रुपया खर्च किया था और फारेन एक्सपोजर जो दिया था उसमें हमारे डिपार्टमेंट ने 55 लाख रुपया स्पेंट किया था ।

SHRI V. GOPALSAMY: Very small.

KUMARI MAMTA BANERJEE: Very small, all right. But the fact...

[कु० ममता बनर्जी]

जो भुगतान है वह बताना मेरा कर्त्तव्य है। सर, जो इक्विपमेंट हम लोगों ने प्लेयर्ज को, खिलाड़ियों को दिया है वह सफीशिएंट तो नहीं है, यह बात तो सच है और जो बात सही है उसे कहने के लिए मुझे कोई दुख नहीं है। क्यों मैं आज खुश हूं इसी के लिए जो आज खेल-कूद के बारे में हाउस में डिसकशन हुआ है, आज एक बात साफ हो गई है, हाउस का हर सदस्य चाहता है कि खेल-कूद नेशनल प्रायरिटी में आए। इसी के लिए डिसकशन में अगर मेरे लिए कोई क्रिटिसिज्म है तो वह क्रिटिसिज्म डाइजेस्ट करने के लिए मैं तैयार हूं, लेकिन यह हाउस आज डिसीजन ले कि स्पोर्ट्स को नेशन में प्रायरिटी देना और टाप प्रायरिटी देना आज जरूरी है, अगर खेल-कूद को अच्छे स्तर पर उठाना चाहते हैं, अगर हिन्दुस्तान में खेल-कूद को बढ़ाना चाहते हैं।

SHRI V. GOPALSAMY: Let us do it. The Government has to decide.

कु० ममता बनर्जी : 53 प्लेयर्ज को हम लोगों ने भेजा था, सर, इस बार से पहले इंटरनेशनल ओलंपिक एसोसिएशन ने न्यू गाइडलाइन्स बनाया था। उन गाइडलाइंस के अन्दर जिन्होंने क्वालिफाई किया था उनको ही हम लोगों ने भेजा। क्यों भेजा, सर, हम लोगों ने अर्जुन सिंह जी के नेतृत्व में एक मीटिंग किया था। उस मीटिंग में फेडरेशन का आदमी भी था, आई. ओ. ए. का आदमी भी था। उसमें डिसीजन हुआ था। अगर जिसने क्वालिफाई किया है हम लोग उसको नहीं भेजेंगे तो फारेन एक्सपोजर उसको नहीं मिलेगा। वह डीमारेलाइज हो जाएगा। इसी के लिए हम लोग तैयार किया था ठीक है, यूनैनिमस डिसीजन लिया था कि जो क्वालिफाई किया है उसको भेजना जरूरी है। इसी के लिए 53 पर्सन्ज हम लोगों ने भेजे हैं। लेकिन सर, एथलैटिक्स में 7 आदमी क्वालिफाई किए थे लेकिन दो को भेजा है। मैं एथलैटिक्स फेडरेशन को कांग्रेचुलेट करना चाहती हूं इसी के लिए कि 7 आदमी क्वालिफाई करने पर भी उन लोगों ने खाली दो को भेजा, पांच को नहीं भेजा कि उनको मौका नहीं था। सर, ओलंपिक के बारे में थोड़ा टैली करती हूं। अभी ओलंपिक के थोड़े न्यू रूल्ज बने हैं और उसी कारण हमारे प्लेयर्स को दिक्कत हुई। ठीक है, लेकिन सर, एथलैटिक्स में, सियोल में जब ओलंपिक हुए उसमें जो हमारी टीम भी वह 4×100= 400 मीटर्स रिले उसमें वह टीम 10थ पोजिशन में आई थी। अभी शाइनी विल्सन ने अपना ही नेशनल रेकार्ड ब्रेक अप किया है। In archery, Limba Ram secured 1232 points, in the Scoul Olympics. This time, he secured 1306 points. In hockey, India finished 6th last time. This time, of course, we finished 7th. We lost to Great Britain. It was most unfortunate.

सर, टैनिस में पहले हम लोग डबलज में फर्स्ट राउंड में हार गए थे अभी रमेश और लेयंडर क्वार्टर फाइनल में पहुंचे हैं।

In table tennis, Kamlesh Mehta finished 4th in his group, last time. This time, he finished 2nd in his group. In yatching, the team, in the 470 class, finished 19th in a field of 29, last time.

This time our team in 470 class finished 23rd in a field of 29. Wrestling: Two wrestlers came 9th last time. This time one came sixth in free-style and another came eighth in Greco-Roman wrestling.

सर, यह थोड़ा सा जो हम लोगों ने इवेल्यूएट किया है, अभी तो हमारा सबडिवीजन नहीं आया है, आई. ओ. भी नहीं आए हैं, लेकिन इन परफोरमेंस के बाद हम लोगों ने फैडरेशन की एक मीटिंग बुलाई थी अर्जुन सिंह जी के नेतृत्व में। Out of 12 federations only Eight turned up.

हम लोगों ने इसके बारे में डिसकशन भी किया था और फैडरेशन को हम लोगों ने रिक्वेस्ट भी किया हैं। By 15th September they have to send their plan of action for next Olympic and Asian games.

सर, हमारा एक प्लेन करना जरूरी है। हम लोग कोई प्लेयर्स को डिमोरेलाइज नहीं करना चाहते हैं क्योंकि आज जो अच्छा नहीं किया है, कल हार्ड वर्क अच्छा करके किया

जा सकता है । आज डिवीजन देना भी जरूरी है। जो कोई मैडल विन करने के लिए संभव होना है, उसको ही हम लोग भेजेंगे आने वाले ओलम्पिक में, लेकिन जिसको संभव नहीं होता है उसको हम लोगों ने नहीं भेजना है । फॉरेन एक्सपोजर हम लोगों देने के लिए तैयार हैं क्योंकि फारेन एक्सपोजर देना भी जरूरी है। अब 15 सितंबर के बाद में जो रिपोर्ट मिलेगी, उसके बाद में सितंबर माह के लास्ट वीक में हमने, अर्जुन सिंह जी ने मीटिंग तय की है, जिसमें इंडियन ओलम्पिक एसोसिएशन, सभी नेशनल फेडरेशन और थोड़े से स्पोर्टस-परसन्स, जो एमीनेण्ट स्पोर्टस-परसन हैं, जो अच्छे सुझाव हम लोगों को दे सकते हैं उनको लेकर इसके बारे में जरूर डिसक्शन करेंगे ।

सर, मोहम्मद सलीम जी ने एक क्वेश्चन किया था, जो एल.टी.डी.पी. में हम लोग क्या कर रहे हैं ? इसका ट्रेनिंग दिया है छह महीना पहले या नहीं ? वह बात ठीक नहीं है । हम लोग ट्रेनिंग दे रहे हैं दो वर्ष से और एक कोचिंग का चल रहा है । सर, बहुत डिसिप्लिन है हमारे हिन्दुस्तान में, लेकिन हमारे रिसोर्स बहुत कम हैं । अगर हर डिसिप्लिन में हम लोग ध्यान देंगे तो कुछ नहीं होगा। इसीके लिए थोड़ा साए डिसिप्लिन करके, जिसमें पोटेंशियलिटी है, उसको करने के लिए हम लोग तैयार हैं । इसी के लिए जो सूटिंग है, दिसंबर, 1992 तक इसका कोचिंग चलता रहेगा। रेसलिंग में अगस्त, 1992 तक चलेगा, फिर भी होगा। जूडो में नवंबर, 1992 तक चलेगा, यह दो वर्ष से शुरू हुआ है। हॉकी वीमेन सितंबर, 1992 तक चलेगा, हॉकी मैन अगस्त, 1992 तक, गोल्फ जनवरी, 1993 तक, इक्विस्ट्रेशन मार्च, 1993 तक, बास्केटबाल दिसंबर, 1992 तक, बैडमिंटन जनवरी, 1993 तक, आर्चरी अगस्त, 1992 तक और याचिंग दिसंबर, 1992 तक ।

सर, यह प्रोग्राम हम लोगों ने शुरू किया है। यह बात साफ है, जैसा एन० के० पी० साल्वे जी ने कहा, है, सिकन्दर बख्त जी ने कहा है और भी माननीय सदस्यों ने कहा है, अगर हमको स्पोर्टस में ठीक सा कुछ करना है कैच देम यंग प्रोग्राम ही राइट प्रोग्राम है। कैच देम यंग प्रोग्राम स्टार्ट किया है स्पोर्टस अथोरिटी आफ इण्डिया ने ।

सर, हमारा स्पोर्टस डिपार्टमेंट वर्ष 1982 में, जब एशियाड हुआ था उसके बाद, सेटअप हुआ था । उसके बाद क्या हुआ है, भर कि सेवेन्थ फाइव ईयर प्लान में, श्रीमति इन्दिरा गांधी जी जब प्राईम-मिनिस्टर थी उन्होंने कोशिश की थी एशियाड के समय कि स्पोर्टस के बारे में हमारा एक अलग से डिपार्टमेंट होना चाहिए, तो सेवेन्थ फाइव ईयर प्लेन में 200 करोड़ रुपए सेक्शन किया था, लेकिन अब एट्थ फाइव ईयर प्लान आ गया और कितना रुपया सेक्शन हुआ, सर, केवल 210 करोड़ रुपए। लगातार प्राइस इन्क्रीज हो रही है, सब चीज में हो रही है, लेकिन 210 करोड़ रुपए एट्थ फाइव ईयर प्लान में सेक्शन हुए हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा, सर, कि साल 1989-90 में हमारा बजट एस्टीमेट था 46.30 करोड़ रुपए, जो रिवाइज एस्टीमेट था 54.23 करोड़ रुपए । वर्ष 1990-91 में बजट एस्टीमेट था 48.56 करोड़ रुपए, रिवाइज एस्टीमेट था, 43.94 करोड़ रुपये । वर्ष 91-92 के लिए बजट एस्टीमेट था रुपए 53.56 करोड़ और रिवाइज एस्टीमेट हो गया 47.10 करोड़ रुपए । अभी वर्ष 1992-93 में एस्टीमेट है 41.36 करोड़ रुपए । अब आप लोग हमको बताइए कैसे होगा ? क्योंकि इस बजट के अंदर फॉरेन-एक्सपोजर देने के लिए हमको रुपया देना पड़ेगा डिपार्टमेंट को । फिर, सर, यह फॉरेन, एक्सपोजर, कैच देम यंग प्रोग्राम, कोचिंग, ट्रेनिंग, इनसेन्टिव इण्डोर स्टेडियम, प्ले फील्ड, यह सब इस लिमिटेड मनी से करना पड़ेगा । . . . **(व्यवधान)** . . .

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): After devaluation this is the figure. How are you going to do it?

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR (Uttar Pradesh): Being a Minister she is criticising the Government. It is good because the House is superior to Government.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: We are listening to her. She is speaking very well. We would like her to continue without interruption.

कु० ममता बनर्जी : सर, जैन जी ने क्वेश्चन किया है कि हम लोगों ने फंड ठीक से युटिलाइज नहीं किया है । सर, इसमें मैं थोड़ा बोलना चाहती हूं । 1991-92 में जो बजट हमको मिला था, वह हमने पूरा युटिलाइज किया है । In 1990-91 we could not utilize the full budget due to the cut imposed.

1989-90 में भी ऐसा ही हुआ था, Finanle had not agreed. That5s wdy som part was not utilized.

लेकिन 1991-92 में, जब अर्जुन सिंह जी एच० आर० डी० में मिनिस्टर हुए, मैं भी बनी, पूरा फंड हम लोगों ने युटिलाइज किया है और हम लोगों ने यह किया है कि और सदस्यों को मैं इसी के लिए कांफिडेंस में लेना चाहती हूं । सर, गवर्नमेंट अकेले कुछ नहीं कर सकती जिसका बजट है 41.36 करोड़। स्टेट में भी बहुत . . (**व्यवधान**) . .

श्री दिग्विजय सिंह : आठ आने पर आदमी पड़ा ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): That is what she says.

SHRI DIGVIJAY SINGH: We are concerned about it.

80 करोड़ की आबादी के देश में 40 करोड़ रुपया सालाना मिलने का मतलब है कि आठ आना पैसा रोजाना पूरे साल में स्पोर्ट्स पर खर्च हो रहा है ।

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश) : आबादी 86 करोड़ हो गई, और भी कम पड़ रहा है ।

कु० ममता बनर्जी : ईवन स्टेट गवर्नमेंट में भी, मैंने बहुत सारे स्टेट्स में विजिट किया है । मैंने पूछा स्टेट स्पोर्टस मिनिस्टर को कि आपको कितना बजट मिलता है ? बोले क्या मिलता है, दो करोड़, तीन करोड़ मिलता है । तो स्टेट मिनिस्टर को कैसे हम ब्लेम करेंगे, वह भी इसके अंदर नहीं कर पाता है क्योंकि स्पोर्ट्स में इतना लो प्रियोरिटी दिया गया है । लेकिन आज खेल-कूद में सबका इंटरेस्ट है, लेकिन खाली इंटरेस्ट होने से कुछ नहीं होगा, अगर हम अपने बच्चों को स्कूल से ही तैयार नहीं करेंगे । चन्द्रिका जी ने राइट ट्वाइट रेज किया है कि योग सबसे अच्छी चीज है, फिजिकली एजुकेशन है, मगर आज स्पोर्ट्स एजुकेशन में कम्पलसरी करना जरूरी है । आज हर एजुकेशन में, एजुकेशन से थोड़ा बजट कम करके और उसका जो बर्डन है, पढ़ने के लिए एकाडेमिक बर्डन, उसे थोड़ा कम करके उसे स्पोर्ट्स में थोड़ा युटिलाइज करना चाहिए । इससे उसको मेंटल रिलेक्सेशन भी मिल जाएगा और वह उसमें भाग भी ले सकता है । सर, स्पोर्ट्स अथारिटी आफ इंडिया से एन०एस० डी० सी० स्कीम हमने शुरू किया है बच्चों के लिए । 56 स्कूलों को हमने एडॉप्ट किया है, इसमें 1200 स्टूडेंट्स हैं । We are spending Rs| 18,000 for these children. They have started from the eighth year.

सर, एस० ए० जी० सी० सेंटर भी—स्पेशल एरिया गेम सेंटर—हम लोगों ने शुरू किए हैं स्पोर्ट्स अथारिटी आफ इंडिया से, इसमें भी हमारे जो चिल्ड्रन्स हैं, इसमें भी we are spending Rs. 22,000 per cdild.

लिबा राम हमारे एस०ए०जी०सी० का ही प्रोडक्ट है । सर, एस०पी०डी०ए० सेंटर भी—स्पेशल प्रोजेक्ट डैवलपमेंट एरिया जो प्रोग्राम है वह भी हम लोगों ने किया इसी के लिए कि अगर बच्चों को हम लोग रुरल एरिया से नहीं टेलेंट नर्चर करेंगे तो कुछ नहीं होगा । इसी के लिए 78 एस०पी० डी० ए० सेंटर्स सारे देश में खोलने के लिए हम लोगों ने 8वीं पंचवर्षीय योजना में कहा है । अभी तक 22 आपरेशनल हैं । इसी के लिए हम लोग यह करना चाहते हैं ट्राइबल ब्वायूस एंड गर्ल्स के लिए भी । मैं काफी दिन पहले हिमाचल में भी गई थी, मैं नार्थ-ईस्टर्न रीजन में शिलांग में भी गई थी मिनिस्टर के साथ में, जो सेवन सिस्टर्स स्टेट्स है, वहां मिनिस्टर्स के साथ भी मीटिंग करके यह ठीक किया है । बहुत सारे ट्राइबल ब्यायूस और गर्ल्स हमारे देश में हैं, उनकी

पोटेंशिएलिटी बहुत ज्यादा है, लेकिन उसको खाना नहीं मिलता है, उसको नौकरी नहीं मिलती है, उसको सीखने को नहीं मिलता है, हम अगर उसकी मदद करने के लिए तैयार हों, उसके लिए छोटा सा त्याग करने के लिए तैयार हों तो मैं नहीं समझती कि हिन्दुस्तान में कोई कम है । इसी के लिए, सर, मिनिस्टर होने के बाद पब्लिक सैक्टर, प्राइवेट सैक्टर की हम लोगों ने एक मीटिंग की है लास्ट ईयर के सितम्बर महीने में और पब्लिक सैक्टर व प्राइवेट सैक्टर में दो दिन मीटिंग की है हम-लोगों ने और हमने रिक्वेस्ट किया है । उन लोगों से कि आप एक-एक अकादमी बनाएं । खाली एक लाख रुपया, दो लाख रुपया देकर खाली टी०वी० में पब्लिसिटी के लिए प्रोग्राम नहीं होना चाहिए । पहले अकादमी होना चाहिए, इंस्टिट्यूशन होना चाहिए, स्पोर्ट्स स्कूल होने चाहिए जिसमें एक-एक डिसिप्लिन आइडेंटिफाई करके कोई मदद कर सकें। और क्या चाहिए, खाने, पीने का भी इंतजाम करना चाहिए ।

सर, अगर एक खिलाड़ी के घर में माता-पिता बीमार हैं, अगर उसके घर में खाना नहीं है, अगर उसको नौकरी नहीं है तो, वह कैसे कंसन्ट्रेट कर सकता है, कैसे वह खेल सकता है ? इसी के लिए पब्लिक सैक्टर प्राईवेट सैक्टर को हम लोगों ने भी किया है कि आप लोगों को करना जरूरी है । हर स्टेट गवर्नमेंट को मैंने रिक्वेस्ट किया है । आप लोगों के माध्यम से भी मैं रिक्वेस्ट करना चाहती हूं कि जिस स्टेट में जो भी प्राईवेट सैक्टर हैं, जो प्राइवेट इण्डस्ट्रिलिस्ट हैं उनके पास आप हमारी रिक्वेस्ट टेक-अप कीजिए। अगर मलेशिया में कोई प्राईवेट सैक्टर को रिपोर्ट में कुछ खर्चा करने के लिए उसको कम्पलसरी है, तो हमारे कन्ट्री में क्यों नहीं हो सकता है । जो इन्डस्ट्रिलिस्ट बहुत सारा रुपया कमाता है, उसको स्पोर्ट के लिए पैसा देना ही चाहिए। एक परसेंट तो होना चाहिए । वह परसेंट दें, नहीं तो वह उसको खुद ओपन करें। जैसे टाटा करते हैं। टाटा ने फुटबाल एकाडमी बनाया है। एम०आर०एफ० ने कमिट किया है । वह गोवा में फुटबाल एकाडमी बनाने जा रहा है । जैसे मेस्र ने कमिट किया है । वह एक हैन्डबाल एकाडमी बनाने जा रहा है ।

SHRI N.K.P. SALVE: A very important point she is making, Sir. I appreciate the sincerity with which she is speaking. I just want to tell her one thing. In our country, whether it is the public sector or the private sector, the difficulty comes because the expenditure that they incur is not allowed by the Income-Tax Department to be deducted as expenditure. You kindly take it up at the Government level...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DSEAI): That is very good suggestion.

SHRI N.K.P. SALVE: ....and see that this is allowed as expenditure. Any expenditure incurred on sports activity must be allowed, if not at premium, at least 100 per cent.

KUMARI MAMTA BANERJEE: Sir, I am very greatful to Salveji. For your information I am telling you, under the leadership of Arjun Singhji, in a high-powered committee, we met the Finance Minister, and we requested him

स्पोर्ट के बारे में जितने भी इक्वपमेंट बाहर से लाना है और जो भी स्पोर्ट में मदद करेगा, उनको इंकम टेक्स टोटल फ्री होना चाहिए।

That we have already done.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): That is right.

कु० ममता बनर्जी : लेकिन फाइनेंस मिनिस्ट्री को हमने टेकअप किया है, फाइनेंस मिनिस्टर से हम लोगों ने कहा है। हम लोगों ने डिपार्टमेंट से कोशिश की है । We have already taken up this issue with the Finance Minister.

लेकिन एक काम तो भी हो सकता है । जब हाउस का हर सदस्य एक साथ फाइनेंस मिनिस्टर के साथ एक डिवीजन ले सकता है ।

...(*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Please don't. Afterwards I will allow you.

SHRI ASHIS SEN (West Bengal): I want to know whether the Finance Minister has rejected the proposal... (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Mamtaji, you please don't deal with that now. You please continue... (*Interruptions*)

SHRI V. GOPALSAMY: What is the response of the Finance Minister?

कु० ममता बनर्जी : सर, रेस्पोंस के बारे में तो मैं इसके बारे में आप लोगों को मदद चाहती हूं। स्पोर्ट एक मूवमेंट बनाना चाहिए, जैसा गुरुदास दास गुप्ता जी ने कहा है । मैं उनकी आभारी हूं जो हर आदमी ने कहा है । स्पोर्ट एक मूवमेंट बनना चाहिए । स्पोर्ट मूवमेंट सिर्फ तभी होगा जब मास्क इंवोल्वमेंट इसमें होगा । तो इसी के लिए हमने हाई पावर कमेटी लेकर के फाइनेंस मिनिस्टर के साथ बातचीत की है, डेप्यूटेशन किया है, सब कुछ किया है । लेकिन फाइनेंसियल कंसट्रेंट के बारे में अगर उनको कोई दिक्कत है तो आप एक दिन एक साथ मिलकर इस हाऊस में स्पोर्ट के बारे में कहें कि जो भी देना है आप दीजिए । अगर जरूरी है, तो हमारे डिपार्टमेंट के आफिसर के लिए नहीं, हमारे लिए नहीं, अगर हमारे लिए जरूरी है तो हम स्पोर्ट डिपार्टमेंट से गाड़ी भी नहीं लेगा, लेकिन स्पोर्ट का जो पसन है इसके लिए देना चाहिए ।

SHRI BHUBANESWAR KALITA: The whole House is with you, Mamtaji.

SHRI DIGVIJAY SINGH: The whole House is with you Mamtaji... (*Interruptions*)

KUMARI MAMTA BANERJEE: Thank you very much, thank you very much. एक्सपेंडीचर के लिए नहीं, लेकिन स्पोर्ट के लिए जो खर्चा होगा वह हमारे देश के फ्यूचर के लिए, सर । I remember one proverb. If you plan for a year, you sow paddy. If you plan for a decade, plant trees. If you plan for the future, you nurture the youth. अगर यूथ को आप कैच नहीं करेंगा Sports is the place for national integration. स्पोर्ट में खेल-कूद से ही हम लोग सब कुछ कर सकता है । इसी के लिए हमारे डिपार्टमेंट ने एक वर्ष में क्या किया, मैंने आपको थोड़ा बताया, मैं और भी बताना चाहती हूं । गांव में जो छोटे-छोटे बच्चे हैं, अगर उनको हम मदद नहीं दे सकते तो हम कुछ नहीं कर सकते हैं । इसीलिए स्पोर्ट पालिसी को मजबूती से लागू करने के लिए एक्शन प्रोग्राम जो माननीय अर्जुन सिंह जी ने हाऊस में एण्योर किया था, ले आयेंगे । 19 को हम लोग एक्शन प्रोग्राम हाऊस में ले करेंगे । जो एक्शन प्रोग्राम है, हाऊस में ले करने से पहले में नहीं बोल सकती हूं । लेकिन सर, एक और प्रोग्राम हमने बनाया है, जिसे सुनकर आप लोग खुश होंगे । पंचायत लेबिल टीम की हमने कोशिश की है । सर, इंटर पंचायत लेबिल टूरनामेंट होगा । There will be inter-panchayat level tournaments. The panchayat level team will go to the district level. Then this panchayat level team will go to the State level.

Then his team will come to the national level. So, from the grass-root we will find out the talent and they will play at the national level. That scheme also propose to set up. We have already decided on it. अर्बन एरिया में भी हमने राजीव खेल योजना के नाम से एक योजना बनाई है । स्लम एरियाज के जो ब्वाईज और गर्ल्स हैं उनकी ती कोई गलती नहीं है । इनके लिए हमने ये योजना बनाई है और स्पोर्टस डिपार्टमेंट में जितनी भी कमेटीज हमने बनाई हैं, आपको सुनकर खुशी होगी कि हमारे डिपार्टमेंट ने एक हाईयेस्ट एवार्ड देने के लिए कहा है । पहले हमारे डिपार्टेंट ने कहा कि कोई मिनिस्टर इसका चेयरमैन बने लेकिन अर्जुन सिंह जी ने और मैंने इसको टर्न डाऊन कर दिया कि हम स्पोर्टस बैकग्रांउड से नहीं हैं । जो

हायेस्ट स्पोर्टस परसन है वे इस एवार्ड के बारे में तय करेंगे । हम उस कमेटी में नहीं हैं लेकिन स्पोर्टस परसन्स को हमने उस कमेटी में रख दिया है । जितने भी हमारे हिंदुस्तान में स्पोर्टस परसन हैं उनको हमने हर कमेटी में डाला है । आपको सुनकर खुशी होगी कि एडवेंचरस स्पोर्टर बछेन्द्री पाल, जो हमारे देश का गौरव है, उनको हमने स्पोर्टस आफ इंडिया की गवर्निंग बाडी में मेंबर बनाया है इसलिए कि महिलाओं को आगे करना है। बनाया है इसलिए कि महिलाओं को आगे करना है । यह भी हम लोग कर रहे हैं ।

एक बात सच है जो साल्वे जी ने बहुत स्ट्रांगली कही है अफसरों और पोलिटिशियंस के बारे में । स्पोर्टस तो स्टेट सब्जैक्ट है और आटोनोमस बाडी है । इसलिए हम लोग इंटरफियर नहीं कर सकते लेकिन अगर वह कन्करेंट लिस्ट में आ जाओ तो लेजिस्लेशन लाकर बहुत कुछ हम कर सकते थे लेकिन कुछ स्टेट्स इसके फेवर ; हैं और कुछ स्टेटस इसके फेवर में नहीं दे । आप लोगों की जो भावनायें हैं वही हमारी भी भावनायें हैं

(व्यवधान)

SHRI N.K.P. SALVE: It is a very important issue, Sir. I agree with her statement. They have a right to issue guidelines. They have a right to send directives. The Cricket Control Board has never taken a penny from the Government and yet their guidelines we have to abide by. If we don't abide by their guidelines, they will never give us foreign exchange. The ultimate control is in their hand. No legislation is needed. You give guidelines and every association will have to abide by those guidelines.

कुमारी ममता बनर्जी : सर, हमारी गाइडलाइस है लेकिन प्राब्लम क्या हुआ है, मैं बोलना नहीं चाहती थी । गाईडलाईस हमारी है लेकिन हमारे देश में बहुत सारे इन्फ्लूयेंशियल, पावरफुल लोग हैं इनकी वजह से कभी गाईडलाइंस फौलो करते हैं कभी फोलो नहीं करते हैं । इसको हमने अपने डिपार्टमेंट से टेकअप किया है कि जो स्पोर्ट्स का गाईडलाइंस है, अगर कोई फैडरेशन उसको नहीं मानेगा तो हम लोग उसको मदद देने के लिए तैयार नहीं हैं । मैं किसी स्पोर्टस फैडरेशन के खिलाफ नहीं हूं लेकिन उनको गाईडलाइंस को मानना जरूरी है । अब फैडरेशन के अंदर भी कुछ झगड़ा है, उसमें हम लोग क्या कर सकते हैं । कौन सेक्रेटरी बनेगा, कौन प्रेजीडेंट बनेगा, रेसलिंग होती है इसके लिए ।

अब हमने एक चीज और की है । पहले कोई टीम क्लियर होती थी दो घंटे पहले , तीन घंटे पहले । अब हम लोग बहुत पहले से ही टीम क्लियर कर देते हैं ताकि प्लेयर लोगों का कोई हैरेस्मेंट न हो । और भी एक बात है । हमारे यहां फिजिकली हैंडीकैप्ड के लिए और इंडिजिनस स्पोर्टस के लिए और एडवेंचर्स स्पोर्टस के लिए कोई एवार्ड नहीं थी । इंडिनिजस स्पोर्टस जो गांवों के लडके लोग खेला करते हैं, उसके लिए एवार्ड देना चाहिए । उसके लिए हम स्कीमड तैयार कर रहे हैं । फिजीकली हैंडीकैप्ड लोग भी अच्छा खेलते हैं और अच्छा प्रदर्शन करते हैं । उनके लिए कोई एवार्ड नहीं है । फिजीकली हैंडीकैप्ड लोगों को मदद देने के लिए हमारा डिपार्टमेंट स्कीम बनाएगा ।

सर, एक बात और है । ब्यूरोक्रेट्स और आफिसर्स के बारे में जो बात माननीय सदस्यों ने कही है, इसके बारे में अर्जुन सिंह जी जरूर ध्यान देंगे लेकिन अगर मेरी बात पूछना चाहते हैं तो मैं तो आपको सपोर्ट करूंगी कि अगर कोई स्पोर्टस परसन.... instead of the bureaucrats and the politicians if a sportsperson is going to be President of the Federation, it will be very fruitful for the country. I support this.

SHRI N.K.P. SALVE: With reference to the Golf Club, Madam...

SHRI V. GOPALSAMY: Sir,...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): No. She has replied in detail. (*Interruptions*) No. We have got other things also.

SHRI V. GOPALSAMY: I would like to seek a clarification.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): No. (*Interruptions*)

SHRI V. GOPALSAMY: We did not interrupt her with hope that we will be given a chance to seek clarification later on.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): She has not yet completed. Let her complete... (*Interruptions*) ...

SHRI V. GOPALSAMY: What is the purpose of raisingt this Calling Attention motion? We have raised some questions. When we are not satisfied... (*Interruptions*)...We have raised some queries... (*Interruptions*)...

KUMARI MAMTA BANERJEE: I am having all the points with me. If you want me to reply to every question that has been raised by the hon. Members, it is very difficult. I am ready to give a reply to every question. I have already covered the important points.

THE VICE-CHAIRMAN: It is not possible to reply to every question. She has given so many details. It is not necessary that she should reply to every question.

श्री संघ प्रिय गौतम : खिलाड़ी कहां से लाएंगे ? ...

कुमारी ममता बनर्जी : खिलाड़ी बोर्डों से लाएंगे ? ...(**व्यवधान**)

श्री संघ प्रिय गौतम : कोई एथलीट नहीं हो सकता ...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Please sit down... (*Interruptions*)...It will not go on record. If anybody speaks without my permission, it will not go on record.

KUMARI MAMTA BANERJEE: I will reply to it. Don't get agitated. जो बात उन्होंने कही है, ठीक है । माननीय सदस्य का जो गुस्सा है उससे मुझे दुख नहीं पहुंचा है, आप बोल सकते हैं आप कंस्ट्रक्टिव परपज के लिए बोल सकते हैं...

The Sports Authority of India through SAG programmes, through NST schemes and through SPDA schemes are finding out the talent from the rural areas and from the tribal areas.

यह फैडरेशन का भी काम है । They should find out the talent and they should start these coaching and training camps also...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): How many hours did we spend on the Calling Attention motion? I will not allow anyone. Please sit down. We have taken a lot of time on this Calling Attention motion. Just see we dave got other business also to be transacted. She cannot reply to all the points.

SHRI V. GOPALSAMY: Then, what is the purpose of raising this Calling Attention motion? She has not replied to my clarifications.

KUMARI MAMTA BANERJEE: Don't worry, I will reply. As I said earlier, if the sports is going to be a compulsory subject at the school level, then, the boys and girls will come out with sports background from the school level. Instead of laying too much emphasis on the academic work, they should involve them in the sports activities for a full day. They should relax the academic work. For sports we should give some funds. As you know, Sir, our country consists of 860 million people but only 5000 people are involved in sports activities. So we have to lay emphasis on the right to play at the grass-root level. That is why we have started these schemes so that the Panchayat level team can play at the national level. That is why we have involved them in the NYK, in the rural activities so that they can organise the rural sports activities. In every State we are trying to set up a Committee. The States's Sports

Minister will be the Chairman of that Committee to coordinate...

SHRI V. GOPALSAMY: Despite all the hurdles, all the handicaps you are doing something for promotion of the sports. I really appreciate it. May I know from the Minister whether she attributed the failure of the Indian team at the Barcelona Olympic Games to the lack of confidence in the players? This has appeared in the press also. That was the point I had raised.

KUMARI MAMTA BANERJEE: No, Sir.

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRI ARJUN SINGH): Sir, I would like to state very categorically that nowhere in the statement has it been said that there was any lack of confidence in the players. This is a remark which the hon. Member has made. In all humility, I would like to say it is very unfair to the players, it is very unfair to the country... (*Interruptions*)...

SHRI V. GOPALSAMY: It was stated in the press.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI (JAGESH DESAI): He has denied it.

SHRI V. GOPALSAMY: I did not make the charge against the Minister. I wanted to know about it, because it appeared in the press.

SHRI ARJUN SINGH: Sir, I am standing on the statement that has been made We have never said anything like that. If something like that has been said, in all humility, I would like to say it is not fair to the players, not fair to the country. They may not have succeeded. But that is not attributed to them personally. (*Interruptions*).

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI (JAGESH DESAI): No further clarification No. Please, sit down.

SHRI V. GOPALSAMY: ...I agree with him...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): That is all right. Sit down, please.

SHRI V. GOPALSAMY: The statement appeared in the name of Ms. Banerjee. (*Interruptions*). Then, you should have given a denial on the next day itself.

SHRI ARJUN SINGH: Sir, I want to make only one point. (*Interruptions*).

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): ...We cannot be answering press reports.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI (JAGESH DESAI): Mr. Gopalsamy, the Minister has said 'no'.

SHRI ARJUN SINGH: Sir, I would only like to say one thing. My esteemed colleague has replied very ably and creditably to all the points mentioned here. She is also very intensely involved in all the steps that can be taken to improve the situation in the sphere of sports in the country. But, as she has said, it will require the cooperation—and, also, a little more than cooperation—from every person in this country, to come to a certain situation where we would not have to be complaining in the manner in which we are doing today. Shri Salveji made a point and I want to assure him—it is a very isolated case, but it is a typical case —that I will take up the matter with which-ever authority has issued that letter and try to make amends so that the impression that people can go ahead and do whatever they like simply because they are sitting in a position in the Government does not persist.

KUMARI MAMTA BANERJEE: Sir, only one minute. I will furnish. (*Interruption*).

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Mr.Gopalsamy, please sit down. What has happened to you?

KUMARI MAMTA BANERJEE: Mr. Gopalsamyji has raised some points. Arjun Singhji has already replied As you know, in our country, we are having so many newspapers. That is why we have mentioned in our statement also that it is not 'despondence'. It is disappoint-

[Kumari Mamta Banerjee]

ment, of course. But it is not despondence. We want to encourage our players. We do not want to blame our players. We have to build up our players. We have to give morale boosters to them. They should not be upset. They should continue with their work in future also. (*Interruptions*). Today, Limba Ram may not have succeeded. But, tomorrow, Limba Ram may succeed. Let us work together. We need cooperation from each and everybody. The Government cannot do everything alone. That is why we want cooperation. I am grateful to every Member of this House. It may be that somebody is annoyed with me. Somebody may have some grievances. But that is different. I can tell you, to develop sports, whatever the country wants from our department, from within our limited resources, we are willing to give. The Government is willing to extend all the cooperation to sports persons. With these words, I conclude and I thank you very much.

STATUTORY RESOLUTION SEEKING APPROVAL OF THE CONTINUANCE OF PRESIDENT'S PROCLAMATION IN RELATION TO NAGALAND

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI M. M. JACOB): Sir, I beg to move:

> "That this House approves the continuance in force of the Proclamation issued by the President on the 2nd April, 1992, under article 356 of the Constitution, in relation to the State of Nagaland, for a further period of six months with effect from the 2nd October, 1992."

As the House is aware, President's rule was promulgated in the State of Nagaland on the 2nd April, 1992. The Proclamation... (*Interruptions*)... made under Article 356(1) of the Constitution was approved by the Lok Sabha on 23-4-1992 and by the Rajya Sabha on 28-4-1992. After the proclamation of President's rule in the State, the law and order situation has improved and the administration of the State has been able to create a feeling of confidence among the people. The Public Distribution System has been overhauled and middlemen removed. The people of the State are now getting rice, sugar and other essential commodities. The hospitals have medicines available and doctors have been positioned. During the last three months of President's rule in the State, the entire State machinery has been galvanised into action and the law-enforcing agencies have been reorganised. In Nagaland, rains continue up to October. Due to heavy rains, most of the rural roads are disrupted by landslides. Intensive revision of electoral rolls is being undertaken and it is expected to be completed by January 1993. It is, therefore, not possible to hold elections before 1st October, 1992.

Keeping in view the situation prevailing in the State and the difficulties in holding elections before the expiry of the present term of President's rules, it is proposed that the President's rule in the State of Nagaland may be continued for a further period of six months with effect from 2nd October, 1992. In view of this position, I solicit the approval of this august House to the Resolution moved by me.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): The Resolution has been moved. There is one amenmdent by Shri Satya Prakash Malaviya.

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA (Uttar Pradesh): Sir, I move:

> "That in the said Resolution for the words "six months", the words "three months" be substituted."

The questions were proposed.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Now, the Statutory Resolution and the amendment moved are open for discussion. Shri Ram Ratan Ram.

SHRI N.K.P. SALVE (Maharashtra): Sir, are we likely to come to the voting point on this today?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Yes. One hour time has been allotted. I will strictly adhere to the time.